सितम्बर 2020

दादावाणी

Retail Price ₹ 15

गुजराती भाषा में 'दादावाणी' प्रकाशन के...

25 Years

300 विविध विषयों पर 'दादावाणी'

वर्ष : 15 अंक : 11
अखंड क्रमांक : 179
सितम्बर 2020
पृष्ठ - 28

Editor : Dimple Mehta
© 2020
Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved.
Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज**,
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन: (079) 39830100
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
+91 8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)

15 साल

भारत	: 1500 रुपये
यू.एस.ए.	: 150 डॉलर
यू.के.	: 120 पाउन्ड

वार्षिक

भारत	: 150 रुपये
यू.एस.ए.	: 15 डॉलर
यू.के.	: 12 पाउन्ड

भारत में D.D./M.O. 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

अक्रम साइन्टिस्ट 'दादाश्री' का वैज्ञानिक ब्रेन

संपादकीय

इस काल का बेजोड़ आश्चर्य, ज्ञानी पुरुष 'दादा भगवान' (दादाश्री), जिनके निमित्त द्वारा एक अकल्पनीय आध्यात्मिक क्रांति का सर्जन हुआ। कुदरत की बलिहारी तो देखो! ऐसे कलिकाल में मात्र एक घंटे के भेदज्ञान के प्रयोग से स्वरूप ज्ञान की प्राप्ति करवा देना, वह क्या कोई ऐसी-वैसी सिद्धि कही जाएगी? ऐसे सिद्धिवान पुरुष की अनंत जन्मों की आध्यात्मिक खोज और प्रयत्नों का परिणाम अर्थात् 'अक्रम विज्ञान'!

अक्रम विज्ञान, यह कुदरत का ग्यारहवाँ आश्चर्य है! 'न भूतो न भविष्यति' ऐसे दादा भगवान, कि जिन्होंने जगत् को अक्रम विज्ञान की भेंट देकर इस कलिकाल के जीवों पर बहुत बड़ा उपकार किया है। दादाश्री ने व्यवहार में निश्चय को लाकर एकदम नए ही शास्त्र की रचना की है और वह भी फिर साइन्टिफिक, जिसमें कोई भी विरोधाभास देखने को नहीं मिलता।

साइन्टिफिक विज्ञान किसे कहते हैं? जो सैद्धांतिक हो, जिसमें कोई विरोधाभास न हो, कोई भी प्रयोग करे उसे एक सरीखा फल मिले। यदि सोने में तांबा, पीतल, चांदी इन सभी धातुओं का मिश्रण हो गया हो तो कोई भी सोनी उसके गुणधर्म को पहचानकर, उन्हें अलग कर सकता है या नहीं? हाँ, उसी प्रकार अनंत सिद्धि वाले सर्वज्ञ ज्ञानी ने आत्मा व अनात्मा के गुणधर्मों को पहचानकर, उनके एक-एक परमाणु का पृथक्करण करके, दोनों को अलग करके, शुद्ध आत्मा का अनुभव करवा दिया, वही अपना अहोभाग्य कहलाता है।

अक्रम ज्ञानी की सैद्धांतिक वाणी जो 'दादावाणी' के रूप में प्रकाशित होती है, उसे इस सितम्बर में पच्चीस वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। इस उत्सव की खुशी में सहभागी होने के लिए अक्रम विज्ञानी 'दादाश्री' के अक्रम विज्ञान की एक झांकी यहाँ पर संकलित हुई है। दादा भगवान की यह वाणी कभी-कभी ऐसी लगती है कि रिपीट हो रही है लेकिन अब, उसके सूक्ष्म व सूक्ष्मतर अर्थ समझने के प्रति हमारा दृष्टिकोण होना चाहिए। अहो! ये अक्रम विज्ञानी की दशा! अहो! यह अक्रम विज्ञान! अहो! ये पाँच आज्ञा! जहाँ दादा भगवान कहते हैं कि 'इसमें तीर्थंकरों के सभी आगम आ जाते हैं, अब, ऐसी इन (पाँच) आज्ञाओं का निरंतर आराधन होना चाहिए और ज्ञानघन आत्मा को जानने के बाद, विज्ञानघन आत्मा को जानना चाहिए'। तब फिर प्रमाद किसलिए? हमें दृढ़ निश्चय करके विज्ञानघन आत्मा को जानने के पुरुषार्थ में लग जाना चाहिए।

दादाश्री की अंतरंग दशा को समझकर, आज्ञापालन के पुरुषार्थ के द्वारा अनुभव की सीढ़ियाँ चढ़कर, इस विज्ञान को हृदयगत करके, हम सभी महात्मा खुद के स्व-पद का स्पष्ट अनुभव करें, यही अभ्यर्थना।

- **जय सच्चिदानंद**

अक्रम साइन्टिस्ट 'दादाश्री' का वैज्ञानिक ब्रेन

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलतः गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

विज्ञान अर्थात् कैश बैंक

यह अक्रम विज्ञान बहुत साइन्टिफिक है, विज्ञान है। विज्ञान किसे कहते हैं? जो सिद्धांत रूपी हो। सिद्धांत अर्थात् जो विरोधाभासी न हो। और, नकद फल मिलना चाहिए, उधार नहीं चलेगा। इतना किया तो फिर अगले दिन उसका फल मिलना ही चाहिए। अभी आप मेरे साथ यहाँ पर बैठे हो, उसका भी नकद फल मिलेगा। यहाँ पर जो भी करते हो, उन सब का नकद फल मिलेगा, उधार नाम मात्र को भी नहीं, उसे कहते हैं विज्ञान। अब यहाँ पर आप एक चक्कर लगाते हो तो आपको नकद फल मिले बगैर रहेगा नहीं। यह तो विज्ञान है, आप जहाँ से पकड़ोगे वहाँ से ताल मिलेगा।

साइन्स है यह तो। पूरे वर्ल्ड में किसी भी जगह पर यह साइन्स नहीं निकला है। दिस इज़ द कैश बैंक ऑफ डिवाइन सॉल्यूशन! पहली बार ही यह लोगों के बीच अनावृत हुआ है।

दादा हैं वर्ल्ड की ओब्ज़र्वेटरी

यह सब तो मेरी पृथक्करण की गई वस्तुएँ हैं, और वह एक जन्म का नहीं है। एक जन्म में तो इतने सारे पृथक्करण कहाँ संभव है? अस्सी साल में कितने पृथक्करण कर पाएँगे भला? यह तो अनेकों जन्मों का पृथक्करण है, वह सब आज हाज़िर हो रहा है।

प्रश्नकर्ता : इतने सारे जन्मों का पृथक्करण इस समय इकट्ठा कैसे प्रकट होता है?

दादाश्री : जन्म टूटा इसलिए। अंदर ज्ञान तो सारा है ही। आवरण टूटना चाहिए न? ज्ञान विद्यमान की तो जमापूँजी है ही, पर आवरण टूटने पर प्रकट होता है!

सभी फेज़िज़ (पहलू) का ज्ञान मैंने खोज निकाला था। हर एक 'फेज़िज़' में से मैं पार निकल आया हूँ और हर फेज़ का मैंने 'एन्ड' ला दिया है। उसके बाद यह 'ज्ञान' हुआ है।

दिस इज़ द वर्ल्डस् ओब्ज़र्वेटरी। चार वेद के *ऊपरी* (बॉस) हैं ये दादा। अतः आपके मन को सभी खुलासे मिल जाने चाहिए। तभी समझ में आएगा और तभी निबेड़ा आएगा। नहीं तो, यह गप्प तो हज़ारों सालों से गाते आ रहे हैं, कुछ नहीं हो सकता। अतः जब तक आपको समझ में न आ जाए तब तक पूछो। यहाँ पूछने जैसा है।

मूलतः मेरा वैज्ञानिक स्वभाव

प्रश्नकर्ता : आप पृथक्करण क्या और किस तरह से करते थे?

दादाश्री : मैं जब छब्बीस-सत्ताईस साल का था तब कृपालुदेव की किताबें पढ़ता था। फिर वहाँ पर जो महाराज आते थे, स्थानकवासी आते थे तो वहाँ पर जाता था और देरावासी आते थे

तो वहाँ पर जाता था। एक बार एक स्थानकवासी महाराज आए थे। उन्होंने मुझसे कुछ बातें सुनीं। तब मुझसे कहा कि 'आप वैज्ञानिक इंसान हो! आपका यह दिमाग़ वैज्ञानिक है! कभी न कभी, भगवान महावीर की बात आपको बहुत अच्छी तरह से समझ में आएगी'। उनके कहने से पहले तो मैं कुछ नई ही बात कह देता था। वैज्ञानिक दिमाग़! वही एक महाराज थे जो मुझे पहचान गए थे।

वे महाराज कुछ कह रहे होते और वही बात मैं कह देता था। उन्होंने कहा, 'ऐसा किसी को नहीं आता'। तब मैंने कहा, 'ये महाराज सही कह रहे हैं'। उन्हें समझ में आ गया था कि यह सभी बातें बहुत ही उच्च प्रकार की करता है।

मेरा वैज्ञानिक स्वभाव था, शुरू से ही। जितना (शास्त्र) पढ़ा, उस पर से मैं विज्ञान बताता था। विज्ञान अर्थात् कि यह मेरे पाताल का पानी है। इसमें से (शास्त्र में से) लिया, लेकिन पानी निकलता था पाताल में से!

वैज्ञानिक अर्थात् खुद का ही सबकुछ (सिद्धांत) बनाना। सामने वाला बात करे उससे पहले ही आगे का सबकुछ देख लेना, सामने वाले को रास्ते पर ला देना।

मुझे बचपन से ही आदत थी कि जब कोई ज्ञान की बातें करता तब मैं उसे विज्ञान की तरफ ले जाता था। वैज्ञानिक स्वभाव तो मेरा बचपन से ही था। वैज्ञानिक अर्थात् मूल शब्द मिलने के बाद मैं न जाने कहाँ तक पहुँच जाता था! बात ज्ञान की चल रही होती थी, तो मैं उसमें से न जाने कुछ अलग ही खोज कर देता था! लोग विज्ञान की बात सुनते हैं तो उसे ज्ञान में ले जाते हैं और मैं ज्ञान की बात को विज्ञान में ले जाता था। विज्ञान यानी कि ऐसी-ऐसी बातें जो शास्त्रों में नहीं मिलती थीं लेकिन उसकी सभी प्रकार से स्पष्टता हो जाती थी।

परिणाम को पकड़ने वाला 'वैज्ञानिक ब्रेन'

बचपन से ही वैज्ञानिक ब्रेन! परिणाम को पकड़ने वाला! हर एक चीज़ प्राप्त हो उससे पहले परिणाम को पकड़ लेते थे, हमेशा। अत: यह परिणाम को पकड़ने वाला ब्रेन, काम आया इसमें।

मेरा बिलोना परिणामवादी था। 'आज बिलोना बिलोया उसमें क्या आया?' इस तरह से देखने की आदत थी। बिलोता ज़रूर था लेकिन अगर देखने के बाद कोई मक्खन नहीं मिलता था तो मैं छोड़ देता था। मैं बिलोता ज़रूर था लेकिन मेरा यह परिणामवादी था। यह देख लेता था कि परिणाम स्वरूप मुझे क्या प्राप्त हुआ। तो मैं भी बिलोता था, लेकिन बिलोने पर ही मुझे यह सब मिला! बिलोते-बिलोते मिला है न! लेकिन वह परिणामवादी था।

बचपन से ही मेरा एक स्वभाव था कि कोई भी कार्य करता था तो पहले मैं उसका परिणाम देखे बगैर नहीं रहता था। सब बच्चे चोरी करते थे तो कभी मेरा मन ललचाता ज़रूर था कि, यह करने जैसा है, लेकिन तुरंत ही मुझे परिणाम स्वरूप भय ही दिखाई देता था। शुरू से ही परिणाम दिखाई देते थे इसलिए कहीं भी चिपकने नहीं दिया। मुझे साथ में यह रहता ही था कि इसका परिणाम क्या आएगा, हर बात में।

अकेला होते ही अंदर सूझ पड़ती

मैं शॉर्टकट ढूँढ निकालता था। बचपन से मुझे अलग मार्ग मिल गया था, शुरू से ही। बचपन से ही मार्ग बदलता था, मैं लोगों के आधार पर नहीं चलता था। जहाँ कोई टोली जा रही होती थी न, तो मैं उस टोली में नहीं चलता था। मैं देखकर जाँच करता था कि यह टोली किस तरफ ले जा रही है? यह रास्ता भला इस तरह घूमकर

और वापस उस तरह जा रहा है। अब उस पूरे रास्ते का हिसाब लगाया जाए तो एक के बजाय तीन गुना होता था, तो यह आधा सर्कल डेढ़ गुना होता है। तो डेढ़ गुना रास्ते पर जाकर मार खाए या सीधे? तो मैं सीधा चलता था, लोगों के रास्ते पर नहीं चला, शुरू से ही। लोगों के रास्ते पर कोई काम नहीं। मेरा काम लोगों से कुछ अलग था, तरीका भी अलग था, रस्म भी अलग थी, सभी कुछ अलग। मेरी शुरू से ऐसी ही आदत थी। मुझे लोग क्या कहते थे, मैं बताऊँ?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : कहते थे, 'सीधा जा रहा है?' मैं कहता था, 'हाँ'। तब वे कहते थे, 'तू हम से पहले कैसे पहुँच गया? सीधे चलकर आया?' मैंने कहा, 'हाँ, 'सीधे चलकर आया हूँ तो क्या आपकी टोली की तरह मंजीरा बजाकर आपके साथ घूमूँ? मैं अपने तरीके से दूसरा रास्ता ढूँढ लूँगा। मुझे यह सब नहीं चलेगा।

कुदरत का नियम क्या है? पड़ोस में अगर कोई न हो और अकेला ही हो, तो उसे कुछ सुझाने वाला अंदर है लेकिन यदि दूसरे चार लोग हों तो कौन सुझाएगा? अकेला हो तो सूझ पड़ेगी। अत: इस जगत् में इसी बात की झंझट है कि अकेला नहीं है! जबकि मैं अकेला घूमा हूँ क्योंकि बचपन से ही मेरा स्वभाव ऐसा था कि आम रास्ते पर नहीं चलना है, खुद के बनाए हुए रास्ते पर चलना है। कितनी ही बार उससे मार भी बहुत पड़ी, काँटे भी खाए हैं लेकिन अंत में यह तय था कि इसी रास्ते जाना है, तो इस रास्ते पर हमें रास आ गया। कई जन्मों तक मार पड़ी होगी, अगर रास्ता नहीं मिलता था तब अंदर वाले से कह सकते हैं कि 'मैं तो अंधा हूँ इसलिए तुझे नहीं पहचान पाता लेकिन क्या तू भी अंधा है? मुझे कोई सही रास्ता बता' इस तरह से भगवान को डाँटना पड़ता है। अरे भई! तुझे अगर कुछ भी समझ में न आए तो 'अंदर वाला है', ऐसा करता रहेगा तब भी तेरे अंदर के वे आवरण टूटेंगे, आगे का रास्ता दिखेगा लेकिन अगर बाहर भगवान को ढूँढेगा तो उससे तेरा कुछ भी नहीं हो पाएगा। लेकिन अंत में यह ढूँढ निकाला, वह बात पक्की है।

अंदर ही 'मिले भगवान'

मैं बचपन से ही भगवान ढूँढ रहा था। भगवान के अस्तित्व का कोई प्रमाण दे तू मुझे। क्या प्रमाण नहीं होना चाहिए? लेकिन फिर मुझे एक चीज़ पर से भगवान मिल गए। बचपन से दर्शन इतना हाई (ऊँचा) था कि लघुत्तम सीखते हुए मुझे भगवान समझ में आ गए।

जब मैं चौदह साल का था, तब स्कूल में एक मास्टर जी मिल गए थे। वे मुझे गणित में लघुत्तम सिखाने आए। 'लघुत्तम सीखने के लिए इतनी संख्याएँ आपको दी हैं, इनमें से लघुत्तम ढूँढ निकालो', उन्होंने कहा। ऐसी पाँच-दस संख्याएँ देते और पूछते थे। तब मैंने मास्टर जी से पूछा, 'यह फिर क्या? लघुत्तम द्वारा आप क्या कहना चाहते हैं? लघुत्तम किस तरह से आता है?' तब उन्होंने कहा, 'ये जो सारी संख्याएँ दी हैं, इनमें जो सब से छोटी और अविभाज्य रकम है। ऐसी संख्या जो इन पाँच-दस संख्याओं में सामान्य है और अविभाज्य है।' वे, इस प्रकार से छोटे बच्चे की भाषा में होता है न, ऐसे शब्दों में कह रहे होंगे। अविभाज्य यानी जिसमें फिर से भाग न लगाया जा सके ऐसी, जिसके फिर से भाग नहीं किए जा सकें ऐसी छोटी से छोटी संख्याएँ ढूँढ निकालनी थी।

उन दिनों इंसानों को हमारी भाषा में 'संख्या'

कहते थे कि यह संख्या अच्छी नहीं है। पहले के समय में गुजराती भाषा में ऐसा बोला जाता था कि 'ये संख्याएँ अच्छी नहीं हैं'। मनुष्य से क्या कहते थे? कोई इंसान खराब हो तो मैं कहता था कि 'ये सभी संख्याएँ बहुत अच्छी नहीं हैं'। उन्हें संख्या कहता था, इंसान नहीं कहता था। शब्द ही ऐसे बोलता था।

तो चौदह साल की उम्र में मुझे यह विचार आया कि ये सब संख्याएँ (इंसान) किस तरह की हैं? इतना ही नहीं, ये कुत्ते, बिल्ली, गाय-भैंस, गधे ये सब संख्याएँ ही हैं। फिर मुझे पूरी रात नींद नहीं आई और सोचने लगा। मुझे सिर्फ परिणाम के ही विचार आते थे। हर एक बात में परिणाम के ही विचार आते थे। इसका परिणाम क्या आएगा, वह मेरे सामने हाज़िर हो जाता था।

मुझे वह अगले दिन समझ में आया कि ये तो 'भगवान' हैं, जो कि हर एक संख्या में, गाय में, भैंस में और इंसान में, छोटी से छोटी चीज़ में भी भगवान हैं जो अविभाज्य रूप से रहे हुए हैं। अतः भगवान लघुत्तम हैं। लघुत्तम का फल क्या आएगा? भगवान बन पाएँगे। अतः लघुत्तम से भगवान मिलते हैं, खास तौर पर मुझे ऐसा समझ में आया। भगवान लघुत्तम हैं, ऐसा उन दिनों मुझे समझ में आ गया था। कैसे हैं? अविभाज्य, जिनके भाग नहीं किए जा सकते और जो सभी में रहते हैं, समान भाव से।

प्रश्नकर्ता : वे सभी में कॉमन फैक्टर हैं।

दादाश्री : सभी में कॉमन। यह मुझे चौदह साल की उम्र में समझ में आ गया। यह अच्छी बात है न! ऐसी समझ आ जाए तो! उसे दिमाग़ खुलना कहते हैं! तब मुझे पता चला कि सभी इंसानों में ऐसी कोई छोटी से छोटी वस्तु होनी ही चाहिए न! और भगवान कहते हैं कि 'मैं सभी में हूँ', तो मुझे समझ में आ गया कि आत्मा सर्व में हैं। भगवान अंदर हैं और लोग भगवान को ढूँढने के लिए बाहर भाग-दौड़ कर रहे हैं!

रिसर्च करके मिला अक्रम विज्ञान

तेरह साल की उम्र में स्वतंत्रता जागी थी। तभी से मैंने जाँच की कि भगवान को ढूँढ निकालना है। ऐसा कौन भगवान है जो हमें मोक्ष में ले जाएगा! लेकिन फिर उन्हें ढूँढ निकाला। 'ऊपर कोई भगवान नहीं है' ऐसा ढूँढ निकाला।

यहाँ से वहाँ, ऐसे हिलाया, वैसा किया लेकिन ढूँढ निकाला कि 'है ही नहीं'। 'नहीं है' ऐसा कहा, उसके बाद मैंने इंतज़ार किया। मैंने कहा, 'यदि तू है तो मुझे अभी उठा ले'। 'आकाश दिखा लेकिन कुछ भी नहीं। कुछ भी पता ही नहीं है उसका'। यों ही वहाँ पर लॉस्ट प्रोपर्टी (खोईपाई चीज़ों के) ऑफिस में चली गईं लोगों की सारी अर्जियाँ। फिर कहीं ऐसा पढ़ा कि भगवान तो अंदर वाले को कहते हैं, तब वह बात मुझे अच्छी लगी। कई लोग तो भगवान को 'अंदर वाला' ही कहते हैं न!

अंत में भगवान को ढूँढ निकाला तो ढूँढ ही निकाला, लेकिन भगवान की इतनी अच्छी भक्ति की कि भगवान पूरे ही मेरे वश में हो गए हैं! यों ही प्रकाश हो गया है। कभी सोचा नहीं था वैसा। मैं अपना डेवेलपमेन्ट (उपादान) लेकर आया हूँ। अनंत जन्मों की इच्छाएँ इस जन्म में फलीभूत हुईं।

मैंने पूरी लाइफ रिसर्च में ही बिताई है, पूरी रिसर्च ही की है। इसलिए मुझे भगवान मिले और फिर समझ में आया कि द वर्ल्ड इज़ द पज़ल इटसेल्फ, इटसेल्फ पज़ल बन चुका है। गॉड हैज़

नॉट क्रिएटेड, ओन्ली साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स है यह। सभी संयोग साइन्टिफिक हैं, उन्हीं से सब कार्य होते जाते हैं।

प्रश्नकर्ता : दादा, साइन्टिस्टों के जो ओब्ज़र्वेशन होते हैं न, उसी तरह आपके भी सभी ओब्ज़र्वेशन सोचे-समझे हुए थे। सभी ओब्ज़र्वेशन करके और सभी को नोट किया जाता है, वह साइन्स का नियम है। आपने ज़्यादा से ज़्यादा नोट करके ज़्यादा से ज़्यादा सार निकाला, ऐसा प्रत्यक्ष दिखाई देता है!

दादाश्री : इस प्रकार यह सब नोट किया। हमने इस दुनिया को हर प्रकार से देखा है! और बहुत ही बड़े-बड़े पुरुषों को देखा है। दोनों देखा है मैंने, ऐसा नहीं है कि नहीं देखा है। फिर समझ गया कि यह जगत् पोलम्पोल है।

अंत में अक्रम विज्ञान मिल गया बहुत ही अच्छा! बचपन से ही हम में यह विज्ञान घुस गया था इसीलिए आराम और शांति से ही रहे। दूसरी बाह्य बातें नहीं आती थीं।

सच्चे दिल वाले को हुआ पूर्ण प्रकाश

प्रश्नकर्ता : लेकिन आपको अक्रम विज्ञान किस तरह से प्रकट हुआ? यों ही सहज, अपने आप ही मिल गया या कोई चिंतन किया था?

दादाश्री : अपने आप ही, 'बट नैचुरल' हो गया! हमने ऐसा कोई चिंतन वगैरह नहीं किया। हमें ऐसा सब होता कहाँ से? हम तो ऐसा मानते थे कि, 'लगता है इस तरफ का कोई फल मिलेगा'। सच्चे दिल के थे न, सच्चे दिल से किया था, इसलिए ऐसा लगा था कि ऐसा कोई फल मिलेगा, कुछ समकित जैसा होगा। समकित का कुछ आभास होगा, उसका प्रकाश होगा। उसके बजाय यह तो पूरा ही प्रकाश हो गया!

सन् 1958 में यह 'ज्ञान' प्रकट हुआ! उस दिन 'ज्ञानी' बने! उसके एक दिन पहले तक तो 'हम' भी अज्ञानी ही थे न! उसमें मेरा भी कोई पुरुषार्थ नहीं है।

यह हमें 'नैचुरल' देन है। यह लिफ्ट मार्ग है। दिस इज़ बट नैचुरल! मेरी खोज थी, पर अभी यह 'साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शिल एविडेन्स' है। कुदरती रूप से 'लाइट' हो गई है, आप अपना दीया प्रकट कर जाओ।

प्रश्नकर्ता : आपको 'बट नैचुरल' ज्ञान हुआ वह क्या है? उसे समझाइए।

दादाश्री : 'बट नैचुरल' ज्ञान किसी को ही होता है। कोई कहेगा कि, 'मैंने अपने आप किया है।' तो वह ज्ञान अधूरा रहता है। यह तो 'नैचुरली' अपने आप हुआ है। यदि किया होता, तो अस्सी प्रतिशत विकल्प कम हुआ होता, तो बीस प्रतिशत बाकी रहता। यह तो सौ प्रतिशत निर्विकल्प है, यह वीतराग विज्ञान है!

यह कुदरत की गहन पहेली है। इसमें से कोई नहीं छूट पाया है। और जो छूट गए, वे बताने के लिए नहीं रहे। मैं 'केवलज्ञान' में अनुत्तीर्ण हुआ इसलिए आपको बताने के लिए रह गया हूँ। अत: संभलकर अपना काम निकाल लो। यह आपका ही है। हम तो सिर्फ काम निकलवाने के लिए बैठे हैं!

सिद्धि, अक्रम विज्ञानी की

प्रश्नकर्ता : आप ज्ञान देते हैं, उसके पीछे कोई वैज्ञानिक भूमिका हो तो वैसी कोई बात कीजिए न!

दादाश्री : यह पूरा विज्ञान ही है, अविरोधाभासी विज्ञान है। और विज्ञान की भूमिका

क्या है? आपके सर्व पाप भस्मीभूत कर देता है। उसके बिना तो आप साक्षात्कार प्राप्त ही नहीं कर सकते और साक्षात्कार प्राप्त किए बिना मोक्ष में नहीं जा सकते और वह साक्षात्कार योग निरंतर रहना चाहिए। एक क्षण भी साक्षात्कार योग नहीं बदलता, अपने आप ही रहा करे, आपको याद नहीं करना पड़े।

आत्मा जानने के लिए, अरे! आत्मा जानने की बात तो कहाँ गई पर आत्मा कुछ श्रद्धा में आए कि 'मैं आत्मा हूँ' वैसी प्रतीति बैठे उसके लिए भयंकर प्रयत्न लोगों ने किए हैं। पर वह श्रद्धा बैठनी मुश्किल हो जाती है, ऐसा विचित्र काल है। अब ऐसे काल में आत्मा का अनुभव 'ज्ञानी पुरुष' के पास से हो जाना, वे ही इस 'अक्रम ज्ञान' की सिद्धि है। सभी देवी-देवताओं की 'ज्ञानी पुरुष' पर जो कृपा बरसती है, पूरा ब्रह्मांड जिन पर खुश हैं, उसी से यह सब प्राप्त होता है।

व्यवहार में अवतरण निश्चय का

यह तो विज्ञान है। विज्ञान अर्थात् विज्ञान। विज्ञान में कुछ बदलाव नहीं होता और फिर है सैद्धांतिक, जिसमें किसी भी जगह ज़रा सा भी विरोधाभास नहीं है। और सभी तरह से व्यवहार में फिट होता है, निश्चय में फिट होता है, सभी जगह फिट होता है, सिर्फ लोगों को फिट नहीं होता। क्योंकि लोग तो लोकभाषा में हैं। लोकभाषा और ज्ञानी की भाषा में बहुत फर्क है। ज्ञानी की भाषा कितनी अच्छी है, कोई अड़चन ही नहीं न! ज्ञानी ब्योरेवार सभी खुलासे देते हैं, तभी निबेड़ा आता है।

अपना यह 'अक्रम विज्ञान' यदि जगत् में अनावृत हो जाए तो लोगों का बहुत काम निकाल देगा। क्योंकि ऐसा विज्ञान नहीं निकला है। व्यवहार में, व्यवहार की गहराई में किसी ने किसी प्रकार का ज्ञान नहीं दिया। व्यवहार में कोई पड़ा ही नहीं। निश्चय की ही सारी बातें की हैं। व्यवहार में निश्चय नहीं आया है। निश्चय, निश्चय में रह गया है और व्यवहार, व्यवहार में रह गया यह तो, व्यवहार में निश्चय को लाकर रख दिया है अक्रम विज्ञान ने। और एकदम नए ही शास्त्र की रचना की है और वह भी फिर साइन्टिफिक (वैज्ञानिक)। अब, यह 'अक्रम विज्ञान' अनावृत कैसे होगा? यदि अनावृत हो जाए तो जगत् का कल्याण हो जाएगा!

'अक्रम' है 'फुलस्टॉप' विज्ञान

'अक्रम विज्ञान' वह 'फुलस्टॉप' (पूर्ण विराम) है और 'क्रमिक विज्ञान' वह 'कॉमा' है। यह जगत् सारा क्रमिक विज्ञान से चल रहा है। विज्ञान दो प्रकार के हैं! एक तो, इस जगत् में साइन्टिस्टों बाह्य विज्ञान का तो करते ही रहते हैं न! और दूसरा, यह आंतरिक विज्ञान कहलाता है, जो खुद को सनातन सुख की ओर ले जाता है। अर्थात् जो खुद का सनातन सुख प्राप्त करवाए, वह आत्म विज्ञान कहलाता है और वह जो टेम्परेरी एडजस्टमेन्ट वाला सुख दिलाए, वह सारा बाह्य विज्ञान कहा जाता है। बाह्य विज्ञान अंत में तो विनाशी है और विनाशकारी है और 'यह' (अक्रम विज्ञान) सनातन है और सनातन बनाने वाला है!

अत: विज्ञान दो प्रकार के हैं : एक 'फुलस्टॉप' विज्ञान और दूसरा 'कॉमा' विज्ञान! 'फुल' अर्थात् कुछ नहीं करना।

भेदविज्ञान और अक्रम विज्ञान दोनों एक ही हैं। इस अक्रम विज्ञान का जो भेदविज्ञान है, वह फुलस्टॉप है, जबकि क्रमिक का भेदविज्ञान कॉमा है। यानी इसमें फिर कुछ करने का नहीं रहा। जिसमें कुछ नहीं करना हो, उसे अक्रम विज्ञान

कहते हैं। यदि करना नहीं है तब क्या होता है? तब कहें, सहज रूप से निरंतर होता ही रहेता है।

अक्रम में खत्म कर दिया बाह्याचार

बाकी क्रमिक मार्ग का ज्ञान जो है न, उसमें तो आचार देखने के सिवा आगे और कोई बात ही नहीं चलती जबकि अपने यहाँ आचार नहीं देखते।

यह क्रमिक मार्ग क्या कहता है कि बाह्याचार बदलने के बाद भाव बदलेंगे, तभी मुक्त हो सकते हैं। आप घर पर रहकर कब सर्वांश हो सकोगे और कब आपके बाह्याचार बदलेंगे? वहाँ बाह्याचार किस तरह से बदला जा सकता है?

अत: यह 'अक्रम विज्ञान' का प्रताप है कि जो टेढ़ा है वह 'मैं' नहीं हूँ, और 'मैं' तो यह शुद्धात्मा हूँ!

प्रश्नकर्ता : यानी जिसे सुधारने की कोशिश करता है, फिर भी नहीं सुधरता, और उसके पीछे पूरा जीवन खत्म हो जाता है, लेकिन 'खुद' वह वस्तु है ही नहीं न? ऐसा ही हुआ न?

दादाश्री : हाँ, इसलिए अंत ही नहीं आता न! इसीलिए तो अनंत जन्मों तक भटकना पड़ता है न!

इसीलिए तो लोगों ने तीर्थंकर महाराज से कहा था कि 'हे भगवान! आपको जो क्रमबद्ध लिंक मिली है, वह किसी महा भाग्यशाली को ही मिलती है!' क्रमबद्ध लिंक अर्थात् यहाँ से आगे का रास्ता, उससे आगे का रास्ता, उससे आगे का रास्ता, ऐसे मिल जाता है। क्रमबद्ध! और फिर आखिर तक!

और इन लोगों को क्रमबद्ध लिंक नहीं मिलती और न जाने कहाँ चले जाते हैं!

मुझे भी क्रमबद्ध लिंक मिली थी। मैंने खुद अपने आप के लिए शोध की थी कि यह कैसे हुआ! मुझे वह क्रमबद्ध लिंक मिली थी इसलिए यह पूरा 'अक्रम विज्ञान' प्रकट हो गया न!

अत: यह ''जो टेढ़ा है वह 'मैं' नहीं हूँ'' ऐसा ज्ञान होना, वही 'अक्रम विज्ञान' है और ''जो टेढ़ा है वह 'मैं' हूँ और मुझे सीधा होना है'' वह कहलाता है क्रम!

अपने विज्ञान में यह ज्ञान देते समय अच्छी आदतों और बुरी आदतों को, दोनों को एक तरफ बैठा देते हैं। हम अच्छी आदतों के ग्राहक नहीं हैं और बुरी आदतों के त्यागी नहीं हैं। अपने यहाँ पुण्याचार और पापाचार दोनों को एक तरफ बैठा देते हैं। हम पुण्य के ग्राहक भी नहीं है और पाप के त्यागी भी नहीं है। यानी कि इस एक जन्म के उदय को कोई भी नहीं बदल सकता। जन्म से लेकर मृत्यु तक के उदय को कोई बदल नहीं सकता।

हमें सिर्फ एक ही घंटे का प्रयोग करना पड़ता है। उसके बाद सभी कमज़ोरियाँ चली जाती हैं। वर्ना, करोड़ों जन्मों से भी कुछ हुआ नहीं! क्योंकि बाधक क्या है? वेदांत ने क्या कहा? मल, विक्षेप और अज्ञान। और जैनों ने क्या कहा? राग-द्वेष और अज्ञान। अर्थात् जिसका अज्ञान चला जाए उसकी मुक्ति हो जाती है। अज्ञान कब खत्म होता है? जब ज्ञानी पुरुष के पास जाने से। ज्ञानी पुरुष का वह ज्ञान कैसा होना चाहिए? विज्ञान होना चाहिए। यह तो बहुत गहरी करामात है, यह रहस्यमय विज्ञान है पूरा, चौबीस तीर्थंकरों का संयुक्त विज्ञान है।

वीतराग विज्ञान मुक्ति दिलवाता है

यह तो वीतराग विज्ञान है! प्योर (शुद्ध)

वीतराग विज्ञान, बिल्कुल भी इम्प्योर (अशुद्ध) नहीं!

वीतराग विज्ञान मुश्किल नहीं है, लेकिन उनके ज्ञाता और दाता नहीं होते। कभी-कभी ही जब ऐसे 'ज्ञानी पुरुष' प्रकट होते हैं, तब इसका स्पष्टीकरण मिल जाता है। बाकी, अगर सब से आसान चीज़ है तो वह वीतराग विज्ञान है, दूसरे सभी विज्ञान मुश्किल हैं। अन्य प्रकार के विज्ञान के लिए तो 'रिसर्च सेन्टर' (अनुसंधान केन्द्र) बनाने पड़ते हैं और पत्नी-बच्चों को तो बारह महीनों तक भूल जाए, तब रिसर्च हो पाती है! और यह वीतराग विज्ञान तो, 'ज्ञानी पुरुष' के पास गए, तो प्राप्त हो जाता है, आसानी से प्राप्त हो जाता है।

यहाँ पर जब हम 'ज्ञान' देते हैं, तब 'आत्मा' और 'अनात्मा' दोनों को जुदा कर देते हैं और फिर आपको घर भेजते हैं।

प्रश्नकर्ता : जैसे आउटर (बाह्य, भौतिक) विज्ञान का डेफिनेट (निश्चित) अनुभव होता है, उसी तरह इनर (आंतरिक) विज्ञान का भी डेफिनेट अनुभव होना चाहिए न?

दादाश्री : डेफिनेट अनुभव रहित विज्ञान को, विज्ञान कहा ही नहीं जाता। विज्ञान तो उसे कहेंगे कि जो अनुभव सहित ही हो। तब तक जाना ही नहीं कहेंगे। तब तक जो भी किताबें पढ़ी उसे बुद्धिजन्य ज्ञान कहेंगे, लेकिन विज्ञान नहीं कहेंगे। वह ज्ञान यानी शुष्क ज्ञान, फल नहीं देता है और कैफ बहुत चढ़ता है। 'मैं जानता हूँ', 'मैं जानता हूँ' उसका कैफ बहुत चढ़ जाता है। इस लट्टू (टॉप) को देखो, बड़ा जानने वाला आया! बल्कि कैफ चढ़ जाता है। जबकि विज्ञान तो तुरंत ही फल देता है। वह अनुभव सहित ही होता है। विज्ञान यानी क्या? शक्कर को मीठी कहना, वह ज्ञान है और शक्कर का स्वाद जानना, अनुभव करना, वह विज्ञान है। अत: यहाँ पर यह सारा विज्ञान है। विज्ञान बुद्धि से बाहर होता है। विज्ञान अन्लिमिटेड (असीम) होता है।

मैं यह जितना भी बता रहा हूँ, वह अपूर्व है! पूर्व में कभी भी सुना नहीं है, पढ़ा नहीं है, जाना नहीं है, देखा नहीं है, ऐसा यह अपूर्व विज्ञान है! और तुरंत छुड़वाने वाला है। आपको कितने घंटे तक ज्ञान देना पड़ा था?

प्रश्नकर्ता : एक ही घंटा!

दादाश्री: विज्ञान अर्थात् क्या, कि जो ज्ञान लोगों के ध्यान में न हो। गिफ्ट द्वारा मिल गया हो। मेहनत से नहीं होता। मेहनत से, कसौटी करने से नहीं होता। वह गिफ्ट होती है। यानी साइन्टिस्ट उस गिफ्ट को लेकर ही जन्म लेता है। यह हमारा विज्ञान भी गिफ्ट है। कोई इंसान नहीं कर सकता।

वीतरागी ज्ञान सुना नहीं है, जाना नहीं है और श्रद्धा में नहीं है। यदि वैसा हुआ होता तो काम ही हो गया होता! 'वीतरागी ज्ञान', 'वीतरागी पुरुष' के बिना नहीं मिलता।

वेद के भी *ऊपरी* को भेदविज्ञानी कहा जाता है। जो आत्मा और अन्य पाँच तत्त्वों को अलग कर देते हैं। हमारी सिद्धियाँ इसी चीज़ के लिए चलती हैं कि लोग तत्त्व स्वरूप की प्राप्ति करें।

भेदज्ञान, वह केवलज्ञान का प्रवेश द्वार

प्रश्नकर्ता : क्या यह ज्ञानविधि आपकी बनाई है?

दादाश्री : वह उदय में आई है। यह हमारा जो ऐश्वर्य है, वह प्रकट हुआ है!

प्रश्नकर्ता : इसमें ग़ज़ब की शक्ति है!

दादाश्री : एक्ज़ेक्ट केवलज्ञान! पूरी ज्ञानविधि केवलज्ञान है! यह शक्ति मेरी नहीं है, ऐश्वर्य प्रकट हुआ है। दो घंटे में मोक्ष दे, ऐसा ऐश्वर्य! जिसे दादा की ज्ञानविधि मिल जाए, उसका मोक्ष हो जाता है, आत्मज्ञान हो जाता है। वर्ना, लाखों जन्मों में भी ठिकाना न पड़े।

यह तो मूल आत्मा का ऐश्वर्य है! अहो! ऐश्वर्य है यह! वर्ना, क्या दो ही घंटों में कहीं मोक्ष होता होगा? यह तो मूल आत्मा का वैभव है। वह आत्मा हमने देखा है। उसका ऐश्वर्य अपार है!

ज़बरदस्त ऐश्वर्य प्रकट हुआ है। जो माँगो वह मिलेगा यहाँ, जितना चाहिए उतना, जगत् में माँगते हुए थक जाए। माँगने की आपकी पात्रता होनी चाहिए। यह बहुत बड़ा ऐश्वर्य कहलाता है। दो घंटों में तो इंसान की पूरी दृष्टि बदल जाती है।

यह ज्ञान भेदविज्ञान है। यह तो मतिज्ञान से आगे का ज्ञान है और सौ प्रतिशत मतिज्ञान, वह केवलज्ञान कहलाता है। अर्थात् यह लगभग छियानवे से ऊपर सतानवे प्रतिशत है, इसलिए यह भेदविज्ञान कहलाता है और सौ प्रतिशत हो, तो वह केवलज्ञान कहलाता है।

प्रश्नकर्ता : तो फिर भेदज्ञान, वह सर्वस्व ज्ञान है, ऐसा कह सकते हैं?

दादाश्री : भेदज्ञान ही सर्वस्व ज्ञान और वही केवलज्ञान का प्रवेश द्वार है! अर्थात् बिल्कुल शुद्ध ज्ञान ही परमात्मा है, अन्य कुछ नहीं। देहधारी रूपी, परमात्मा का ऐसा शरीर नहीं होता। वे निर्देही हैं, शुद्ध ज्ञान स्वरूप हैं, केवलज्ञान स्वरूप हैं। वे अन्य किसी स्वरूप में हैं ही नहीं।

इसलिए भगवान ने कहा है कि आत्मज्ञान को जानो। आत्मज्ञान और 'केवलज्ञान' में बहुत ज़्यादा फर्क नहीं है। 'आत्मज्ञान' को जाना, वह 'कारण केवलज्ञान' है और 'केवलज्ञान' 'कार्य केवलज्ञान' है!

'ज्ञानी पुरुष' - वर्ल्ड के ग्रेटेस्ट साइन्टिस्ट

इस जगत् में छः तत्त्व हैं, वे वस्तु के रूप में रहे हुए हैं। वे खुद के वस्तुत्व के संपूर्ण स्वभाव में रहते हैं। इन छः वस्तुओं के सम्मेलन से यह पूरा जगत् बन गया है। इस जगत् को बुद्धि वाला कहाँ से समझ सकेगा?

इन तत्त्वों को हम अलग कर देते हैं। जैसे कि सोना और तांबा दो मिल गए हों तो सुनार उन्हें अलग कर देता है, तो उसी प्रकार से ज्ञानी पुरुष अलग कर सकते हैं। भेदविज्ञानी, जिनके पास भगवान का प्रतिनिधित्व हो, वे इसके भाग कर सकते हैं। तब फिर आत्मा अलग हो जाता है।

वह (आत्मा) किस स्वरूप में होगा? मिक्सचर या कम्पाउन्ड? ये आत्मा और अनात्मा मिक्सचर स्वरूप में होंगे या कम्पाउन्ड स्वरूप में?

प्रश्नकर्ता : कम्पाउन्ड!

दादाश्री : यदि कम्पाउन्ड स्वरूप में हों तो तीसरा नया ही गुणधर्म वाला पदार्थ उत्पन्न हो जाएगा और आत्मा व अनात्मा उनके अपने गुणधर्म ही खो देंगे। तब तो कोई आत्मा अपने मूलधर्म में आ ही नहीं सकता, और कभी भी मुक्त नहीं हो सकता। देखो मैं तुम्हें समझाता हूँ। यह आत्मा जो है, वह मिक्सचर स्वरूप में रहा है।

यदि सोना, तांबा इनका 'मिक्स्चर' हो गया हो और उसमें से यदि शुद्ध सोना निकालना हो तो उसका विभाजन करना पड़ेगा। सोना, तांबा, उन सभी के गुणधर्मों को जान लेगा, तभी उनका

विभाजन किया जा सकेगा। उसी प्रकार आत्मा और अनात्मा के गुणों को जानना पड़ता है, उसके बाद ही उनका विभाजन हो सकता है। उनके गुणधर्मों को कौन जान सकता है? उसी प्रकार आत्मा, अनात्मा के गुणधर्मों को जो पूर्ण रूप से जानते हैं और अनंत सिद्धि वाले सर्वज्ञ ऐसे ज्ञानी हैं, वे उनका पृथक्करण करके, उन्हें अलग कर सकते हैं। वह तो 'ज्ञानी पुरुष' ही कि जो 'वर्ल्ड' के 'ग्रेटेस्ट साइन्टिस्ट' (दुनिया के बड़े वैज्ञानिक) हैं, वे ही जान सकते हैं। आत्मा और अनात्मा के सारे परमाणुओं का पृथक्करण करके, दोनों को अलग करके, एक ही घंटे में आपके हाथों में शुद्ध आत्मा दे देते हैं। इतना ही नहीं, लेकिन आपके पापों को जलाकर भस्मीभूत कर देते हैं, दिव्यचक्षु देते हैं और 'यह जगत् क्या है? किस तरह से चल रहा है? कौन चलाता है?' वगैरह सभी स्पष्ट कर देते हैं, तब जाकर अपना पूर्ण काम होताहै।

ज्ञानविधि में प्राप्ति निर्लेप पद की

मैं जो ज्ञानविधि करवाता हूँ न, सब से पहले उससे दर्शन बदल जाता है। जब वह क्या है? जब वह सारा विभाजन होता है, उस क्षण समय कर्म (पाप) भस्मीभूत हो जाते हैं और अंदर अलग हो जाता है, जो भ्रांति रस से चिपका हुआ था। आप मेरे वे शब्द बोलते हो अर्थात् इसमें जो शब्द आते हैं न, वे शब्द, 'तमाम लेपायमान भावों से मैं सर्वथा निर्लेप हूँ।'

प्रश्नकर्ता : हाँ, लेपायमान भावों से मैं सर्वथा निर्लेप हूँ।

दादाश्री : अत: फिर वह खुद निर्लेप होता जाता है। अंदर जितना बोलता जाता है वह वैसा होता जाता है। घर जाकर यों ही यह सब बोलेने से कुछ नहीं होगा। यहाँ पर विधि करने के बाद होता है, हमारी उपस्थिति होती है न!

प्रश्नकर्ता : दादा, लेकिन जब वाक्य निकलते हैं तब आश्चर्य होता है कि ये कहाँ से आए?

दादाश्री : हमने वह जो देखा है, जाना है और जो हमारे अनुभव में हैं, वह केवलज्ञान स्वरूप आत्मा है। इसलिए ये वाक्य निकलते हैं। तमाम लेपायमान भावों से सर्वथा निर्लेप ही हूँ।

प्रश्नकर्ता : वह विज्ञान है, आपने कहा न!

दादाश्री : हाँ, विज्ञान अर्थात् उसके एक अंश से लेकर सर्वांश तक का हिसाब होना चाहिए। बीच में से काटा हुआ भाग नहीं चलेगा। सिद्धांत अधूरा नहीं होता, सिद्धांत पूरा ही होता है।

देहाध्यास की रुचि ज़रा सी भी शांत नहीं हुई होती, फिर भी जब मैं प्रतीति बैठाता हूँ, उसके बाद वह रुचि तुरंत ही शांत हो जाती है।

यह दर्शन अर्थात् प्रतीति होने के बाद, आगे के भाग का *लक्ष* बैठ जाता है इसलिए फिर (जागृति) नहीं जाती। वह श्रद्धा फिर टूटती नहीं है। बाद में, जैसे-जैसे आगे अनुभव होता जाता है, फिर जब उसका अनुभव नॉर्मल से कुछ आगे जाता है तब उसे खुद को अपना स्वरूप कैसा है, वह दिखाई देता है। वह अबंध स्वरूप है, कभी भी बंधा हुआ नहीं था।

आत्मज्ञान तक ज्ञान, आगे फिर विज्ञान

प्रश्नकर्ता : दादा, अब यह समझना था कि आपकी ज्ञानविधि द्वारा हमें जो रियल ज्ञान होता है, वह और यह विज्ञानस्वरूप, ये दोनों कैसे अलग हैं?

दादाश्री : विज्ञान यानी एब्सल्यूट ज्ञान और जो रियल ज्ञान है, वह आत्मज्ञान होने तक का ज्ञान कहलाता है। आत्मज्ञान स्पर्श होने तक का ज्ञान कहलाता है और फिर उसके बाद में आगे उसे विज्ञान कहते हैं। विज्ञान, वह एब्सल्यूट कहा जाता है। अत: ज्ञान करना पड़ता है जबकि विज्ञान में अपने आप क्रिया होती रहती है।

शास्त्रों से परे की बातें, अक्रम विज्ञान में

प्रश्नकर्ता : ज्ञानविधि में जब आप बुलवाते हैं, उस समय बोल तो लेते हैं लेकिन...

दादाश्री : बोलने की ही ज़रूरत है। बोला तो कभी न कभी उगेगा। अंदर छप गया है न! अत: मैं जो कहता हूँ न, उसे समझेगा कभी। यदि बोला ही नहीं होगा तो क्या होगा?

प्रश्नकर्ता : फिर भी दादा, आप जो बुलवाते हैं उसके पीछे कोई गूढ़ वैज्ञानिक कारण दिखाई देता है।

दादाश्री : हाँ, बुलवाता हूँ। जब तक वह नहीं बुलवाऊँ तब तक अंदर आत्मा अलग नहीं होगा न! इस अक्रम विज्ञान का यही तो सब से बड़ा आश्चर्य है! वर्ना, आत्मा कभी अलग होता ही नहीं। एक्ज़ेक्ट भेदज्ञान होना चाहिए। शास्त्रों में भेदज्ञान नहीं होता। क्या शास्त्रों में कभी ऐसा वाक्य होता है?

प्रश्नकर्ता : नहीं, होता ही नहीं ।

दादाश्री: यदि यह वाक्य अनुभव सिद्ध हो जाए तो यहीं पर मुक्ति हो जाए। ऐसे वाक्यों के सिवा छुटकारा नहीं होता और आत्मा कभी अलग होता नहीं। मूल द्रव्य और उसकी मूल बात होनी चाहिए, मौलिक बात होनी चाहिए। शास्त्रों की बात नहीं चलेगी।

प्रश्नकर्ता : आपके ये जो एक-एक शब्द हैं, वे कलियुग के एक-एक नए शास्त्रों जैसी रचना कर देंगे।

दादाश्री : ये नए शास्त्र ही हैं।

हमारे एक-एक शब्द में अनंत-अनंत शास्त्र समाए हुए हैं। इन्हें समझे और सीधा चले तो काम ही निकाल दे! एकावतारी हुआ जा सकता है, ऐसा है यह विज्ञान! लाखों जन्म कम हो जाएँगे!

पुद्गल से संबंधित यथार्थ स्पष्टीकरण

प्रश्नकर्ता : (दादा, आत्मा को अलग करके आपने कृपा कर दी है, लेकिन इसके साथ ही यह) *पुद्गल* (जो पूरण-गलन होता है), इस *पूरण-गलन* (चार्ज-डिस्चार्ज) के बारे में आपने जो स्पष्टता की, मुझे नहीं लगता कि भगवान महावीर के बाद कोई इस बात को समझ पाया होगा?

दादाश्री : नहीं! लेकिन ज्ञानी के बिना कैसे समझ सकते हैं लोग? लोगों में इसे समझने की क्षमता ही नहीं है न। लोग *पुद्गल* ही कहते रहते हैं। *पुद्गल* यानी क्या? तो कहते हैं, 'शरीर।' अर्थात् शरीर का दूसरा नाम *पुद्गल*। इसकी खोज करने के लिए मैंने बीस सालों तक बहुत टाइम लगाया कि ये *पुद्गल* और ये सारे जो शब्द हैं न, यह *पुद्गल,* किस प्रकार से भगवान मिल सकते हैं वगैरह सब।

यह *पुद्गल* शब्द बहुत बड़ी खोज है। अर्थात् यह *पूरण-गलन,* यदि सिर्फ इतना ही समझ में आ जाए न, तो बहुत हो गया। यह *पूरण-गलन* है और तू शुद्धात्मा। तो अपने आप ही देख ले, क्या-क्या *पूरण-गलन* होता है और उसे माइनस कर दे, तो तू शुद्धात्मा ही है। अब इतनी समझ होती ही नहीं है न लोगों में

इसलिए वापस ज्ञानी के पास आना पड़ता है। इस प्रकार सिखाने से, इस प्रकार बोलने से, वह समझ ज़रूर जाता है कि, 'ठीक है, आपकी बात करेक्ट है', लेकिन फिर अमल में लाना मुश्किल हो जाता है न!

प्रश्नकर्ता : दादा, यों शास्त्रों में तो *पुद्गल* शब्द का अर्थ तो लिखा हुआ ही है न, इस प्रकार से सभी शस्त्रों में? आप कहते हैं कि बीस सालों तक हमने इसका अर्थ ढूँढा।

दादाश्री : अपने (शास्त्र तो) अभी लिखे गए हैं। ये आप्तवाणी वगैरह तो अभी प्रकाशित हुए हैं। वर्ना प्रकाशित ही नहीं हुआ था न! यह तो, नई किताबों में लोग समझ गए, जान गए सब। सत्संग की बातों ही बातों में। बातें की। लोग *पुद्गल* को नहीं जानते थे, सिर्फ *'पुद्गल, पुद्गल'*, इतना बोलते रहते हैं।

प्रश्नकर्ता : दादा, यह कौन से साल की बात है? कब से '*पुद्गल*' शब्द को समझने का प्रयत्न किया था?

दादाश्री : यह तो उन्नीस सौ बत्तीस की बात है। उन्नीस सौ चालीस या उन्नीस सौ बयालीस में मुझे *पुद्गल* समझ में नहीं आया था, उन्नीस सौ पैंतालीस तक भी समझ में नहीं आया था।

प्रश्नकर्ता : दादा, आप जिसे *पुद्गल* कहना चाहते हैं, वह पूरा मिश्रचेतन है और लोग जिसे *पुद्गल* कहते हैं अर्थात् *पूरण-गलन* (चार्ज होना, भरना - डिस्चार्ज होना, खाली होना) कहना चाहते हैं, उसमें फर्क है न?

दादाश्री : *पुद्गल* और *पूरण-गलन,* ऐसा सब कहते ज़रूर हैं, लेकिन उसका मतलब नहीं समझते। ऐसा सब नहीं समझते। अभी भी साधु-महाराज नहीं समझते।

ग्यारहवाँ आश्चर्य - असंयति पूजा

आत्मा तो खुद परमात्मा ही है। इसलिए पूज्य है, लोकपूज्य है। लेकिन *पुद्गल* भी लोकपूज्य बन सकता है, ऐसा है, लेकिन कलुषित भाव निकल जाएँ तब! खुद में कलुषित भाव नहीं रहें और सामने वाले के कारण खुद को कलुषित भाव नहीं हों तो *पुद्गल* भी लोकपूज्य हो जाता है! सामने वाले के कलुषित भाव में भी खुद कलुषित नहीं हो तो *पुद्गल* भी लोकपूज्य बन जाता है। अन्य भाव भले ही रहें लेकिन कलुषित भाव उत्पन्न नहीं होना चाहिए। जो खुद के लिए, दूसरों के लिए, किसी जीवमात्र के लिए कलुषित भाव नहीं करे तो वह पूज्य बन जाता है। 'हम ने' हम में क्या देखा? हम में से क्या निकल गया? यह हमारा *पुद्गल* किसलिए लोकपूज्य बन गया है? हम 'खुद' तो निरंतर 'हमारे स्वरूप' में ही रहते हैं लेकिन इस *पुद्गल* में से सर्व कलुषित भाव निकल गए हैं! इसलिए यह *पुद्गल* भी लोकपूज्य बन गया है! मात्र कलुषित भाव चले गए हैं, फिर खाते हैं, पीते हैं, कपड़े पहनते हैं, अरे! टेरिलीन के भी कपड़े पहनते हैं और इसके बावजूद भी लोकपूज्य पद है! यह भी इस काल का आश्चर्य है न!

यह जो 'ए.एम.पटेल' दिखाई देते हैं वे तो इंसान ही हैं, लेकिन 'ए.एम.पटेल' की जो वृत्तियाँ हैं और उनकी जो एकाग्रता है, वह 'पर-रमणता' भी नहीं है और 'पर-परिणीति' भी नहीं है। निरंतर 'स्व-परिणाम' में ही मुकाम है! निरंतर 'स्व-परिणाम' वर्ल्ड में कभी-कभी, हजारों या लाखों सालों में होता है! कुछ अंशों तक 'स्व-रमणता' रह सकती है लेकिन संसारी वेष में सर्वांश स्व-रमणता नहीं रह सकती। इसलिए आश्चर्य लिखा है न! असंयति पूजा नामक यह आश्चर्य है!

फिर भी यह विज्ञान हर किसी को, शादीशुदा को भी मोक्ष में ले जाएगा लेकिन उसे ज्ञानी की आज्ञा के अनुसार चलना चाहिए। कोई दिमाग़ की खुमारी वाला होगा तो कहेगा, 'साहब', मैं दूसरी शादी करना चाहता हूँ।' यदि तुझे शादी करना हो तो हमारी आज्ञा लेकर करना और फिर इस तरह से रहना! तुम में ज़ोर होना चाहिए। क्या पहले शादी नहीं करते थे? भरत राजा की तेरह सौ रानियाँ थीं, फिर भी वे मोक्ष में गए! यदि रानियाँ बाधक होतीं तो क्या वे मोक्ष में जा सकते थे? तो बाधक क्या है? अज्ञान बाधक है। यहाँ इतने सारे लोग हैं, उनसे यदि ऐसा कहा होता कि स्त्रियों को छोड़ दो तो वे सभी स्त्रियों को कब छोड़ते और कब इसका अंत आता। इसलिए कहा, कि स्त्रियाँ भले ही रहें। देखो, पूरी छूट दी हैं न!

अक्रम द्वारा स्त्री का भी मोक्ष

लोग कहते हैं कि मोक्ष पुरुष का ही होता है, स्त्रियों के लिए मोक्ष नहीं है। इस पर मैं उनसे कहता हूँ कि स्त्रियों का भी मोक्ष हो सकता है। क्यों नहीं होगा? तब कहते हैं, उनकी कपट और मोह की ग्रंथि बहुत बड़ी है। पुरुष की गांठ छोटी होती है, जबकि उनकी उतनी बड़ी जिमीकंद जितनी होती है।

स्त्री भी मोक्ष में जाएगी। भले ही सभी मना करें, लेकिन स्त्री मोक्ष के लायक है क्योंकि वह आत्मा है और पुरुषों के संपर्क में आई है, इसलिए उसका भी निबेड़ा आएगा, लेकिन स्त्री प्रकृति में मोह बलवान होने की वजह से ज़्यादा टाइम लगेगा।

मोक्ष रोका था, 'व्यवस्थित' की खोज के लिए

हमें भी मोक्ष मिल रहा था लेकिन हमने मना कर दिया, हमने रोका था। इस व्यवस्थित की खोज के लिए कि, 'भाई, ऐसा नहीं होना चाहिए। ऐसा कुछ हो कि यों इन सभी के साथ मोक्ष हो जाए। इस संसार में सबकुछ छोड़कर, कैसे ठीक लगेगा। परंतु यह प्रमाणित हो गया। यह अपवाद कहलाता है। हमने यह जो व्यवस्थित दिया है न, वह एक्ज़ेक्ट व्यवस्थित है। हमने ऐसा तय किया था कि 'जब हमारी यह खोज पूरी हो जाएगी तभी हम मोक्ष में जाएँगे', हमारा *नियाणां* (अपना सारा पुण्य लगाकर किसी एक चीज़ की कामना करना) था। इसलिए हमें यह मिल गया और इन सभी को दिया, एक्ज़ेक्ट व्यवस्थित! कितने ही जन्मों से खोज रहा था कि यों साधु बनकर हमें अकेले मोक्ष में नहीं जाना है। घर के सभी लोगों को छोड़कर हमें मोक्ष में नहीं जाना है। और फिर संसार कहाँ बाधक है? संसार का, बेचारे का क्या दोष है?

इस जन्म में तो इसी खोज में लगा था कि, बाधक कौन है, कर्ता कौन है, कई जन्मों से लगा था! मैं जो लाया हूँ न, वह बहुत से जन्मों का सार लाया हूँ! सार निकालते-निकालते लाया हूँ। कर्ता कौन? यह 'व्यवस्थित कर्ता' मैंने दिया। यह साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स, वह मेरा अनुभवपूर्वक देखा हुआ है।

यह खोज बहुत जन्मों की है, सिर्फ पिछले जन्म की नहीं है। और इस हद तक की जिज्ञासा कि भविष्य की चिंता नहीं होनी चाहिए! यदि जन्म हुआ है तो भविष्य की चिंता क्यों होनी चाहिए? इसलिए इस व्यवस्थित को खोज लाया।

हमारा अनंत जन्मों का सार है 'यह'! मैं 'जो' लाया हूँ, वह अनंत जन्मों से सार निकालते, निकालते, निकालते... लाया हूँ। वह सार है, 'व्यवस्थित'! 'साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स'! जो संसार को चलाता है!

अवस्था मात्र कुदरती रचना...

पूरे जगत् के मनुष्य मात्र मन-वचन-काया की अवस्था को, खुद की क्रिया मानते हैं। रियली स्पीकिंग, खुद किंचित्मात्र कर्ता स्वरूप नहीं है। सभी अज्ञान दशा के स्पंदन हैं और वे कुदरती रचना से उत्पन्न हुए हैं। उनका कोई बाप भी रचने वाला नहीं है। दादा ने यह खुद देखकर कहा है।

'मन-वचन-काया की अवस्था मात्र कुदरती रचना है, जिसका कोई बाप भी रचने वाला नहीं है और वह व्यवस्थित है।' हाँ, यदि इतना ही आ गया न, तो उसके सभी आगम पूरे हो गए! इस वाक्य में इतना ज़्यादा क्या सार होगा?

प्रश्नकर्त्ता : सभी अवस्थाएँ 'व्यवस्थित' के अधीन हैं, इसलिए।

दादाश्री : अर्थात् अवस्था मात्र कुदरती रचना है।

प्रश्नकर्त्ता : लेकिन वह संयोगों के आधार पर ही है न?

दादाश्री : हाँ, संयोगों के आधार पर ही हैं न! यानी यह साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स है।

'अवस्था मात्र कुदरती रचना है', ऐसा जब फिट हो जाएगा तब आत्मज्ञान होगा। उसका कोई बाप भी रचने वाला नहीं है। 'बाप भी' कहा, अत: लोगों को बहुत मज़ा आता है। क्योंकि फिर डर निकल जाता है न! कोई बाप भी नहीं है, फिर क्यों बेवजह डरते हो, बेकार में? इसने किया, फलाने ने किया, वर्ना कहेंगे, ग्रहों ने किया। अरे, वे ग्रह अपने घर में बैठे रहेंगे या यहाँ आएँगे? बेचारे ग्रह क्या करेंगे? वे सब तो अपने-अपने घर में रहते हैं। सूर्यनारायण उनके अपने घर में रहते हैं। वे सब अपना-अपना, खुद का स्वभाव व्यक्त करते हैं। उनका जो प्रकाश है, वह तो अनावृत हुए बगैर रहता ही नहीं न!

हमें इस जगत् में किसी की भूल नहीं दिखाई देती, क्योंकि हमें सारा ज्ञान हाज़िर रहता है। लेकिन यदि आपको इतना, एक वाक्य हाज़िर रहे न, तब भी किसी की भूल नहीं दिखाई देगी।

एक-एक शब्द की खोज है, यह

यह अक्रम विज्ञान जब अनावृत होगा तब पता चलेगा कि यह क्या है! पूरा संसार एक दिन सौ, दो सौ, पाँच सौ साल बाद भी इस पर आफरीन होगा। कहीं पर भी ऐसा सिद्धांत देखने में नहीं आया न! यह तो, कभी भी विरोधाभास वाली वाणी ही नहीं निकली। यह फ्रेश है, नई है, उसे हेल्पिंग है।

वही की वही, लेकिन फ्रेश है। अंग्रेजी में 'फाइल' शब्द तो बहुत अच्छा रखा है! क्योंकि बाद में लोग पता लगाएँगे कि यह किस युग में हुआ होगा? अत: अंग्रेजों के युग में यह हुआ होगा, ऐसी खोज करेंगे। फिर इसका कोई बाप भी रचने वाला नहीं है, यह चरोतर में हुआ है! अत: यह भाषा इटसेल्फ (खुद ही) सबकुछ बता देगी। ढूँढने वाले को मिल जाएगा।

प्रश्नकर्ता : दादा, आप जो कहते हैं, उससे तो ऐसा ही लगता है कि जैसे यह शास्त्र का ही वाक्य है। ऐसा ही लगता है। यह जो 'फाइल' शब्द रखा है, उसका विवरण करने वाले करेंगे कि 'फाइल' यानी क्या?

दादाश्री : फाइल शब्द यानी फाइल नंबर वन, ऐसा जो बोल रहा है, वह आत्मा है, वह बात पक्की हो गई। इतनी ज़्यादा गहरी बात है यह। फाइल का मतलब ऐसी चीज़ जो अलग

है, सभी को पता चलता है। ये सभी शब्द ऐसे निकले हैं न! जितने शब्द निकले हैं, उतने सभी एक्ज़ेक्ट हो गए न!

प्रश्नकर्ता : एक्ज़ेक्ट हो गए हैं।

दादाश्री : बेटे से अपना खुद का संबंध है लेकिन इन फाइलों से अपना संबंध नहीं है। क्योंकि फाइल तो हमेशा अलग ही होती है।

प्रश्कर्ता : यदि 'फाइल' शब्द का उपयोग करेंगे तो फिर ममता नहीं रहेगी।

दादाश्री : ममता नहीं, तभी फाइल और फिर वहाँ ममता भी खत्म हो जाएगी। पूरा तरीका ही वैज्ञानिक है। इसका उपाय ही वैज्ञानिक है, इसलिए एक घंटे में फल देता है! ज्ञान लेने में आपको एक ही घंटा लगा था या ज़्यादा? लेकिन कैसा उग निकला? वर्ना, ज्ञान कितने जन्मों में प्रकट होता है! वह तो, अपना यह अक्रम विज्ञान है इसलिए वह ऐसा समझ सकता है कि यह फाइल नंबर टू है, यह फाइल नंबर वन है। इस एक नंबर की फाइल को पहचानता है। यह विज्ञान बहुत ही फर्स्ट क्लास है।

प्रश्नकर्ता : यह जो फाइल नंबर वन है, वह तो ग़ज़ब की खोज है!

दादाश्री : ऐसा है न, यह सारी, एक-एक शब्द वह खोज है, वर्ना करोड़ों जन्मों में भी इंसान छूट नहीं सकता।

यदि पाँच आज्ञा पालन से महावीर दशा

प्रश्नकर्ता : हमें तो, आपने आत्मज्ञान दिया है, पाँच आज्ञा में रहने के लिए कहा है और चरणविधि करने के लिए कहा है। इससे अधिक क्या अन्य कुछ हमारे लिए करना रहता है?

दादाश्री : हमने ये जो पाँच आज्ञाएँ दी हैं न, उनमें से यदि एक का भी निरंतर पालन करोगे तो भी बहुत हो गया।

प्रश्नकर्ता : तो हमें लिफ्ट में बैठा देंगे न? बाकी की ज़िम्मेदारी आपकी न?

दादाश्री : सारी ज़िम्मेदारी हमारी है। यदि पाँच आज्ञा का पालन करोगे तो महावीर भगवान जैसी दशा रहेगी, यह मैं लिखकर देता हूँ। यदि पाँच आज्ञा का पालन करोगे न, तो मैं लिखकर गारन्टी देता हूँ कि भगवान महावीर जैसी समाधि रहेगी तुझे! लेकिन यदि पाँच के बजाय एक का पालन करोगे न, फिर भी ज़िम्मेदारी हमारी है।

हम ज्ञान देते हैं, उसके बाद अन्य कुछ करने को नहीं रहता। हमारी जो पाँच आज्ञाएँ हैं न, उन आज्ञाओं में ही रहना है।

आज्ञा में रहे न, तो बहुत हो गया। वे आज्ञाएँ ही ऐसी हैं कि इसी जन्म में पूर्ण पद को प्राप्त करवा देंगी। फिर भले ही इस जन्म में दस साल जीना हो या पाँच साल, लेकिन उतने में पूर्ण कर देगी।

फंडामेन्टल पाँच आज्ञा

दीज़ आर दी फंडामेन्टल सेन्टेन्सेस। ये क्या हैं? पूरे वर्ल्ड को पार करवा दें, ऐसे ये सेन्टेन्सेस हैं। व्यवहार व निश्चय के भेद सहित हैं। और ये पाँच आज्ञाएँ उसे दिन भर काम आती हैं!

बस, इन पाँच वाक्यों में पूरे वर्ल्ड का सारा साइन्स आ जाता है। उसका कहीं भी, कुछ बाकी नहीं रहता। इन पाँच आज्ञाओं में सभी शास्त्र समा जाते हैं।

प्रश्नकर्ता : यह सभी का दोहन तत्त्व है, यदि ऐसा कहें तो चलेगा।

दादाश्री : पूरे वर्ल्ड का दोहन ही है यह! महावीर के पैतालीस आगमों का दोहन! पाँच आज्ञा में सबकुछ आ ही जाता है, यह सब तो अभी स्पष्ट करने के लिए, समझने के लिए बता रहा हूँ। यदि सूक्ष्मता से देखो तो इसमें सभी चीज़ें आ जाती हैं, कोई बाकी नहीं रहती।

तीर्थंकरों के पैतालीस आगम आ जाते हैं, ऐसी आज्ञाएँ दी हैं! और वे आज्ञाएँ निरंतर हाज़िर रहनी चाहिए, एक क्षण के लिए भी चूकनी नहीं चाहिए। आज्ञाओं का निरंतर आराधन, वही मोक्ष है। क्योंकि आज्ञा किसकी हैं? तीर्थंकरों का जो ज्ञान है, वह ज्ञानी (के माध्यम से) निकला है और ज्ञानी की आज्ञा, वह मोक्ष कही जाती है। ज्ञानी तो हिन्दुस्तान में, चाहिए उतने हैं, लेकिन वे ज्ञानी नहीं कहलाते। जिनमें ज़रा सी भी बुद्धि हो, वे ज्ञानी नहीं कहलाते। जिनमें बिल्कुल भी बुद्धि नहीं हो, वे ज्ञानी कहे जाते हैं। ज्ञानी कौन कहे जाते हैं? जिनमें बुद्धि नहीं हो, वे।

जहाँ बुद्धि नहीं, वहाँ आत्मज्ञान

तत्त्व वस्तु को जानना हो तो जहाँ पर बुद्धि नहीं है, वहीं पर जानने को मिलेगा। अन्य किसी भी जगह पर तत्त्व नहीं है क्योंकि बुद्धि की लिमिटेशन्स हैं और ज्ञान अन्लिमिटेड है। वे ज्ञानी पुरुष होने चाहिए। ज्ञानी तो वर्ल्ड में शायद ही कभी होते हैं। ज्ञानी होते ही नहीं हैं न! वर्ल्ड में कोई भी चीज़ ऐसी नहीं हैं कि जो ज्ञानी के ज्ञान से बाहर हो। यह मैं देखकर बता रहा हूँ। यह कोई पुस्तक की बात नहीं है। पुस्तक काम नहीं आएगी न! पुस्तक की बातें हमेशा जड़ होती हैं और यदि आपने वह चीज़ पुस्तक में से ग्रहण की होगी तो क्या होता? वह भी जड़ होती है। ज्ञान से डायरेक्ट मिलना चाहिए। डायरेक्ट प्रकाश होना चाहिए तभी निबेड़ा आएगा। निरंतर जागृति है दादा की, इसलिए वे उसे समझ सकते हैं। आत्मा को फुल्ली अन्डस्टैन्ड किया (समझ) हुआ है। यह सब अनवेल्ड (निरावृत) आत्मा से ही देखा जा सकता है।

पाँच आज्ञा में पूरे वर्ल्ड का साइन्स

आपको पसंद आई न यह थ्योरी?

प्रश्नकर्ता : अच्छी ही है न! विज्ञान है न यह तो!

दादाश्री : हाँ, विज्ञान है! और यह बुद्धि की सुनता ही नहीं, वह भी आश्चर्य है न! हाँ, सभी ज्ञान बुद्धि की सुनते हैं। और यदि यह बुद्धि की सुनता तो इस विज्ञान को तोड़ देता, कब का तोड़ देता।

विज्ञान उसे कहते हैं कि जो तर्क-वितर्क से मुक्त हो, सरल हो और देशी हो। लेकिन फिर भी, चाहे कैसी भी बुद्धि हो उसकी न सुने! अच्छी-अच्छी बुद्धियाँ देखी हैं। मैंने लेकिन यह किसी बुद्धि की सुनता ही नहीं, उसे फेंक ही देता है। जैसे इलेक्ट्रिसिटी से शॉक लगता है, उस तरह उसे फेंक ही देता है। तब इसका वॉट पावर कितना होगा! वर्ना, बुद्धि हर एक ज्ञान को चक्कर में डाल दे। लेकिन यह विज्ञान अच्छे-अच्छे बुद्धिशालियों को, चाहे कैसी भी बुद्धि हो लेकिन यह विज्ञान सुनता ही नहीं। उसे भी शांत हुए बिना कोई चारा नहीं है। और वह दलील यों गप्प जैसी नहीं स्वीकार्य होनी चाहिए दोनों पार्टियों को!

बुद्धिशाली यानी क्या? उसके लिए कोई नियम नहीं, 'नो लॉ!' यहाँ से फेंके, यहाँ से फेंके, यहाँ से फेंके। जबकि यह विज्ञान, एक ही लॉ में होता है। अन्य दिशा में पलटा नहीं जा सकता। बुद्धि तो, फिर भी चारों ओर से फेंकती है। इधर

से भी फेंकती है, घड़ी भर में उधर से भी फेंकती है लुढ़का देने के लिए। बुद्धि की चारों दिशाएँ खुली होती हैं फिर भी यह विज्ञान बुद्धि की नहीं सुनता। यदि सभी समझ जाएँ न, इन पाँच वाक्यों में तो पूरे वर्ल्ड का साइंस आ जाता है।

एब्सल्यूटिज़म के साइन्टिस्ट

यह विज्ञान है, आत्म विज्ञान! कृष्ण भगवान ने जिसे विज्ञान स्वरूप कहा है, वही यह आत्मा है। ज्ञान स्वरूप आत्मा काम नहीं आएगा। विज्ञान स्वरूप आत्मा, स्पष्ट चेतन स्वरूप होना चाहिए।

आत्मज्ञान जब विज्ञान स्वरूप होता है तब उसमें दोनों अलग-अलग नहीं होते। आत्मज्ञान ही विज्ञान स्वरूप हो जाता है। आत्मज्ञान तो मैंने आपको दिया ही है न, बाद में वह विज्ञान स्वरूप हो जाएगा। भगवान विज्ञान स्वरूप हैं, 'ज्ञान स्वरूप' नहीं हैं। यह मेरा विज्ञान स्वरूप हो चुका है। जहाँ से पूछे वहाँ से जवाब मिलेगा। दुनिया में ऐसा हुआ ही नहीं है। इतिहास में भी नहीं हुआ है ऐसा। अत: हम वेदों के *ऊपरी* कहलाते हैं न! वर्ना, यदि वेदों के *ऊपरी* नहीं होते तो कुछ बोल ही नहीं सकते न, एक शब्द भी। यह तो, जो भी फैक्ट हो, वह बता देते हैं झट से कि दिस इज़ दैट।

ज्ञान अर्थात् आत्मा और विज्ञान अर्थात् परमात्मा। यह तो 'साइन्स' है। आत्मा व परमात्मा का 'साइन्स' यानी सिद्धांत! उसमें कहीं भी अंश मात्र 'चेन्ज' (परिवर्तन) नहीं होता और यह ठेठ आरपार निकाल देता है। ज्ञानघन आत्मा में आने के बाद, अविनाशी पद की प्राप्ति होने के बाद, विज्ञानघन को समझना चाहिए।

वैज्ञानिक कब बन सकता है? जब मन की ग्रंथि पूर्ण रूप से विलय हो जाए, बुद्धि के सभी पर्याय पार कर ले, उसके बाद 'ज्ञान' के पर्याय शुरू होते हैं, उसे भी पार कर ले और जब 'ज्ञान' के बाहर निकल जाए तब 'विज्ञानघन आत्मा' बनता है!

विज्ञानघन अर्थात् सभी में 'मैं ही हूँ', ऐसा दिखाई दे, वह विज्ञानघन आत्मा कहलाता है। बंधा हुआ होने पर भी मुक्त रहता है! 'ज्ञानी पुरुष' तो धर्माधर्म आत्मा से परे और ज्ञानघन से भी परे विज्ञानघन आत्मा में होते हैं, केवल मुक्त पुरुष!

'ज्ञानी पुरुष' खुद 'थ्योरी ऑफ एब्सल्यूटिज़म' में ही नहीं, परंतु 'थ्योरम ऑफ एब्सल्यूटिज़म' में होते हैं। पूरे 'वर्ल्ड' का पुण्य जागा, कि यह 'अक्रम विज्ञान' निकला, विज्ञानघन आत्मा निकला !

जर्मनी वाले एब्सल्यूटिज़म (परम तत्त्व) की खोज में हैं। इसलिए यहाँ से बहुत सारे शास्त्र उठा ले गए हैं और शोध कर रहे हैं। अरे! ऐसे मिल जाए, वैसा नहीं है। आज हम खुद ही प्रत्यक्ष एब्सल्यूटिज़म में हैं। पूरा जगत् थ्योरी ऑफ रिलेटिविटी में है। ये हमारे 'महात्मा' थ्योरी ऑफ रियलिटी में हैं और हम खुद थ्योरी ऑफ एब्सल्यूटिज़म में हैं। केवल थ्योरी ही नहीं पर थ्योरम में हैं।

थ्योरी ऑफ रिलेटिविटी, थ्योरी ऑफ रियलिटी एन्ड दी एब्सल्यूटिज़म थ्योरी। उस एब्सल्यूट में रहकर बात कर रहे हैं इस रियलिटी की!

प्रश्नकर्ता : मैंने खुद ने जो पढ़ा है और जो जानता हूँ, वही मैं अपने विद्यार्थियों को पढ़ाता हूँ। लेकिन मेरी समझ में जो है, वह विद्यार्थियों की समझ में आ जाए, उसके लिए मुझे पहले उनके लेवल पर जाना पड़ता है और फिर धीरे-धीरे उन्हें ऊपर लाना पड़ता है।

दादाश्री : यस-यस। राइट।

प्रश्नकर्ता : तब फिर वे मेरे स्तर तक आ सकते हैं या मुझसे भी ऊपर पहुँच सकते हैं। तो उसी तरह से क्या आप नीचे आकर हमें ऊपर नहीं ले जा सकते?

दादाश्री : वहाँ (रियलिटी में) भाषा नहीं है। रियलिटी में भाषा से आपको समझ में ज़रूर आ सकता है लेकिन वह आपको एब्सल्यूट नहीं बता सकता। अभी तक मैंने आपके साथ ये सारी बातें नीचे उतर कर ही की हैं।

प्रश्नकर्ता : रियलिटी के बारे में कुछ ऐसा बताइए ताकि रुचि जागे।

दादाश्री : बाइ रियली स्पीकिंग, देयर आर सिक्स इटर्नल एलिमेन्ट्स इन दिस वर्ल्ड। बाइ रिलेटिवली स्पीकिंग, देयर आर ओन्ली फेज़िज़, नो इटर्नल एलिमेन्ट।

प्रश्नकर्ता : तो रिलेटिव के बारे में फिर से बताइए? रिलेटिव में क्या कहा आपने? रिलेटिव में फेज़िज़ हैं?

दादाश्री : रिलेटिव में फेज़िज़ हैं और रियल में इटर्नल है। देयर आर सिक्स इटर्नल एलिमेन्ट्स। यह है वर्ल्ड की ओरिजिनालिटी। वर्ल्ड के ओरिजिन में क्या है? तो यह है। इससे आगे कुछ भी नहीं है।

रियल और रिलेटिव

जो सनातन है, उसी को रियल कहा जाता है, और उनके मिलने पर मिक्स्चर रूपी जो कुछ भी बना है, वह रिलेटिव है।

प्रश्नकर्ता : रियल और रिलेटिव उन दोनों में क्या संबंध है? लिंक क्या है?

दादाश्री : रियल परमानेन्ट वस्तु है। अब छः तत्त्वों में से शुद्ध चेतन परमानेन्ट है और बाकी के पाँच जो परमानेन्ट तत्त्व हैं, उनमें चेतन भाव नहीं है। अन्य अनंत प्रकार के गुणधर्म हैं। उन सभी के गुणधर्मों को लेकर ही सिर्फ यह रिलेटिव भाव उत्पन्न हुआ है। आत्मा तो निरंतर आत्मा ही रहता है। गधे में, कुत्ते में, हर एक में आत्मा चेतन के रूप में ही रहता है, निरंतर। क्षण भर के लिए भी बदला नहीं है, सिर्फ बिलीफ रोंग हो जाती है।

प्रश्नकर्ता : क्या यह रियलिटी, रियल का आविर्भाव है?

दादाश्री : हाँ, वह आविर्भाव ही है। अन्य कुछ है ही नहीं।

वास्तव में दिखाई देता है परमानेन्टपन

प्रश्नकर्ता : वास्तव में जो दिखाई देता है, उसमें क्या दिखाई देता है?

दादाश्री : परमानेन्टपन। यह जगत् रिलेटिव टेम्परेरीपन बतात है।

प्रश्नकर्ता : यह सब टेम्परेरी दिखाई देता है।

दादाश्री : अब, परमानेन्ट दिखाई नहीं देता। ज्ञानी पुरुष (जब) ज्ञान देते हैं तब उसकी खुद की दृष्टि परमानेन्ट को देख पाती है, सभी चीज़ें। अब, परमानेन्ट एकदम से नहीं देखा जा सकता परंतु 'खुद' परमानेन्ट हो जाए उसके बाद फिर धीरे-धीरे-धीरे परमानेन्ट दिखाई देने लगता है। तो अंत में यह परमानेन्ट में है कितना? अंत में ये जो छः तत्त्व हैं, वही दिखाई देते हैं। आपको (ये ज्ञान लेने के बाद में) अभी सिर्फ चेतन ही दिखाई देता है। *पुद्गल* परमाणु कब दिखाई देंगे? केवलज्ञान होने पर। परंतु यह मार्ग मूल अविनाशी तत्त्वों को देखने का है।

थ्योरी ऑफ रियलिटी तत्त्व को स्पर्श करती है। कोई भी संत-महंत यह नहीं समझ पाते कि तत्त्व को लेकर भगवान क्या है। वे अपने विचारों और कल्पनाओं से ही समझते हैं।

ज्ञानी अपना आत्मा है, वहाँ सबकुछ पूछा जा सकता है

प्रश्नकर्ता : आपकी हर बात, एक नया ही दृष्टिकोण देती है।

दादाश्री : नया ही दृष्टिकोण देती है, नहीं?

प्रश्नकर्त्ता : नया ही, उसकी कल्पना में भी नहीं हो सकती, कि ऐसा? इस सामान्य बात का पृथक्करण ज्ञानी की वाणी में कुछ अलग ही होता है।

दादाश्री : हाँ, यह सब पृथक्करण के रूप में रख दिया है, सारा स्पष्टीकरण दे दिया है।

प्रश्नकर्ता : आपका कैसा है, कि पूछने वाले का प्रश्न निकला न तो आपका उस तरफ का पूरा विज़न खुल जाता है।

दादाश्री : हाँ, उस तरफ का विज़न खुला हो जाता है।

प्रश्नकर्त्ता : आपसे तो लाखों प्रश्न पूछे गए होंगे, उल्टे-सीधे, पागलों जैसे, परंतु आपके भीतर से विज्ञान ही निकलता है।

दादाश्री : हाँ, यानी मेरा कहना है कि वे चाहे कैसे भी प्रश्न पूछे, आपको तो लाभ है न! उसमें क्या गलत है? अत: आपको वह देखना है कि विज्ञान क्या निकल रहा है! यह देखो न आप! और यदि यह देखना चूक गया, तो उस 'चूकने वाले' को भी 'हमें' देखना है। बस, और कुछ नहीं। अपने यहाँ और कोई झंझट ही नहीं है न! और कुछ पूछना है? सबकुछ पूछकर खुलासे कर लेना। फिर आपके मन में उलझन न रह जाए। यह विज्ञान है, अत: सभी खुलासे कर लेने चाहिए। जहाँ कहीं भी आपको दिक्कत हो वहाँ पूछना चाहिए, उसमें कुछ आबरू नहीं जाएगी कि अभी भी यह पूछेंगे तो.....वह तो, जो बीस साल से यहाँ पर बैठ रहा हो, उसे भी पूछना चाहिए, तब *पुदगल* का *निकाल* होगा। ज्ञानी पुरुष से पूछा जा सकता है, क्योंकि कृपालुदेव ने क्या कहा है कि ज्ञानी पुरुष ही अपना आत्मा है। अत: वहाँ पूछना चाहिए। वह (आपका) आत्मा अभी जवाब नहीं देगा। अत: जब तक आपका आत्मा जवाब न देने लगे तब तक यहाँ से जवाब ले लेना।

आखिरी स्टेशन पर प्रश्नोत्तरी होती है

ये प्रवचन या व्याख्यान नहीं हैं। क्योंकि यह अंतिम स्टेशन है। यहाँ तो, प्रश्नोत्तरी के रूप में होता है। हमेशा लास्ट स्टेशन, अंतिम हद कब आती है? रेल्वे कब पूरी होती है? जब प्रश्नोत्तरी होती है तब। प्रश्नोत्तरी होने लगे तो समझ जाना कि अब, यहाँ गाड़ी बंद होने वाली है, अर्थात् मुक्ति! जिन्हें अंतिम स्टेशन पर जाना हो, उन्हें प्रश्नों के उत्तर रूपी खुलासे कर लेने चाहिए। बाकी के सब बीच के स्टेशन हैं। वे स्टैंडर्ड हैं, उनमें प्रश्नोत्तरी नहीं होती। वहाँ पर शास्त्रों की पढ़ाई होती है, ऐसा सब होता है। उसमें व्रत और नियम होते हैं। सभी तरह का ज़रूरी हैं न! स्टैंडर्ड की भी ज़रूरत है, ऊपर के स्टैंडर्ड की भी ज़रूरत है और आउट ऑफ स्टैंडर्ड की भी ज़रूरत है। आउट ऑफ स्टैंडर्ड यानी मुक्त ही हो गया।

पूरी गीता प्रश्नोत्तरी के रूप में है। अर्जुन प्रश्न पूछते हैं और कृष्ण भगवान जवाब देते हैं।

कृष्ण भगवान ने गीता में कोई प्रवचन नहीं किया। जो प्रश्न पूछे गए उनके ही जवाब ही दिए हैं। वे प्रवचन करेंगे ही नहीं न! अंतिम विज्ञान व्याख्यान के रूप में नहीं होता, प्रश्नोत्तरी के रूप में होता है। अंततः अर्जुन को जो संदेह हुआ, शंका हुई, उसके जवाब दिए हैं बस। उसे धर्म कहते हैं। गीता, वह 'परिप्रश्नेन' है। 'परिप्रश्नेन' यानी अर्जुन ने प्रश्न पूछे हैं और कृष्ण भगवान ने जवाब दिए हैं। वह पूरी गीता का सार है।

अतः कृष्ण भगवान ने क्या कहा? परिप्रश्न अर्थात् प्रश्न पूछकर आखिरी स्टेशन पर आना। बाकी, प्रश्न पूछे बगैर आखिरी स्टेशन पर नहीं आ सकते।

और महावीर भगवान ने भी प्रश्नोत्तरी के रूप में ही बताया है। भगवान महावीर और गौतम स्वामी, उनका भी प्रश्नोत्तरी के रूप में! गौतम स्वामी और वे सभी ग्यारह गणधर पूछते रहते थे और भगवान महावीर जवाब देते थे। उन गणधरों ने जो पूछा, वही महावीर भगवान के संपूर्ण शास्त्र के रूप में लिखा गया है।

सभी आगमों का स्पष्टीकरण यहाँ

आप जो पूछोगे उनके सभी जवाब यहाँ मिलेंगे। पूरे वर्ल्ड में ऐसा कोई आध्यात्मिक प्रश्न नहीं है कि जिसका जवाब यहाँ पर न मिले। पैतालीस आगमों के सभी जवाब, पूर्णतः! हाँ, तभी तो हल आएगा न! निबेड़ा आएगा न!

प्रश्नकर्ता : दादा, जब से आपके पास आया हूँ तब से आप मुझे एक शब्दकोश जैसे ही दिखाई देते हैं। जब हम कहीं उलझ जाते हैं तब आपसे पूछने आते हैं, तब आप तुरंत ही उसका खुलासा कर देते हैं।

दादाश्री : सभी खुलासे, समस्त दर्शन प्राप्त कर चुके हैं। चौबीस तीर्थंकरों का समग्र दर्शन प्राप्त कर चुके हैं। जिसे जो उलझन हो, तुरंत उसका खुलासा मिलेगा। पूर्ण रूप से उसका ज्ञान नहीं हुआ है लेकिन दर्शन तो है ही।

अर्थात् यह अक्रम विज्ञान पूरा सैद्धांतिक रूप से हैं। जहाँ से पूछो वहाँ से सिद्धांत में ही परिणमित होता है। क्योंकि यह स्वाभाविक ज्ञान है। ज्ञान में आई हुई कोई भी चीज़, वापस अज्ञान में नहीं जाती। विरोध उत्पन्न नहीं होता। हर एक के सिद्धांत को हेल्प करते-करते वह सिद्धांत आगे बढ़ता जाता है और किसी के भी सिद्धांत को तोड़ता नहीं है। विरोधाभास उत्पन्न नहीं होता।

अक्रम विज्ञान - अविरोधाभास और सैद्धांतिक

अर्थात् वीतरागों का सिद्धांत कैसा है? अविरोधाभासी। जितने वीतराग हो चुके हैं, उन्हीं को सिद्धांत है यह। यह कोई नया ज्ञान उत्पन्न नहीं होता और पुराना चला नहीं जाता। वही का वही ज्ञान चलता रहता है।

सिद्धांत अर्थात्, जड़ भाव और चेतन भाव, जिन्हें भगवान ने देखा, उसे सिद्धांत कहते हैं। हाँ, जड़ और चेतन नहीं, जड़ भावों और चेतन भावों का ही अवलोकन किया। बाकी भाव तो रहेंगे ही। उन भावों का भान नहीं होता।

अरबों रुपये देने से भी न मिले, इनमें से एक भी अक्षर सुनने को न मिले। जब तक यह बुलबुला (देह) जीवित हैं तब तक काम निकाल लो, फिर एक अक्षर भी सुनने को नहीं मिलेगा! इन सभी को तो अभी जब पाचेगा तब की बात है न! बाकी, पचाना आसान नहीं है। खुद को फायदा हो जाएगा। सिद्धांत हाथ में आ जाएगा पर पचने के बाद ही उगेगा। वह तो बात ही अलग है न! थोड़ा-बहुत उगेगा लेकिन वह ऐसा नहीं

उगेगा न! ऐसा अद्‌भुत नहीं उगेगा! यानी थोड़ा बहुत उगेगा। हमारे आशीर्वाद हैं। हम आशीर्वाद भी देते हैं!

निश्चित किया हुआ ज्ञान, 'ज्ञान' नहीं कहलाता। निश्चित किया हुआ ज्ञान, 'सिद्धांत' कहलाता है। किसी भी वस्तु के सिद्ध हो जाने के बाद उसका अंत आ जाता है। उसे फिर से सिद्ध नहीं करना पड़ता। हमेशा के लिए वह त्रिकाल सिद्ध हो जाता है, उसी को सिद्धांत कहते हैं। जब तक 'स्पष्टवेदन' नहीं होता, तब तक 'सिद्धांत' प्राप्त नहीं हो सकता।

ज्ञान किसे कहेंगे? हर प्रकार से उसका मेल बैठना चाहिए, उसमें विरोधाभास उत्पन्न नहीं होना चाहिए। अविरोधाभासी 'सिद्धांत' तो उसे कहेंगे कि यदि पचास साल बाद भी बोला जाए तो उसका वाक्य मेल खाएगा, विरोधाभास नहीं होगा।

सर्वज्ञ के हृदय में अद्‌भुत ज्ञान

यह ज्ञान, वह एक आश्चर्य ही है न! जो ज्ञान सर्वज्ञ के हृदय में होता है, वही हमारे हृदय में है। सर्वज्ञ पद उत्पन्न हुए किसी को बगैर एक भी चीज़ दिखाई नहीं देती। मुझे सभी चीज़ें जैसी हैं वैसी दिखाई देती हैं। इस जगत् का कोई भी परमाणु बाकी नहीं है, कोई तत्त्व ऐसा नहीं है कि जो मेरे ज्ञान से बाहर हो। जगत् के हर एक तत्त्व का ज्ञानी हूँ।

हम यह सारा, इन शास्त्रों से भी विशेष प्रकार का ज्ञान बताते हैं। हमारा ज्ञान शास्त्रों से भी विशेष प्रकार का ज्ञान है। वे सब केवलज्ञान के अंश कहलाते हैं। जो अन्य किसी को दिखाई नहीं देते, वह भाग देख पाने की वजह से हम बता देते हैं यहाँ पर।

मैं एक सेकन्ड ज्ञान स्वरूप के बाहर भी नहीं रहा, कभी भी। ज्ञान स्वरूप के बाहर एक सेकन्ड भी नहीं रहना, उसे केवलज्ञान कहते हैं। केवलज्ञान अलग चीज़ है और केवलज्ञान स्वरूप, वह अलग चीज़ है। केवलज्ञान अर्थात् सभी ज्ञेयों का झलकना। हम में सभी ज्ञेय नहीं झलके हैं किंतु बहुत सारे ज्ञेय झलके हैं, इसीलिए तो हमारी वाणी में आपको नया-नया सुनने को मिलता है या नए-नए, (ज्ञान की) गहराई वाले पॉइन्ट जानने को मिलते हैं। सभी नई-नई बातें और शास्त्र के बाहर की सारी बातें! ये तो सारे केवलज्ञान के पर्याय हैं परंतु संपूर्ण स्वरूप में नहीं झलका है। चार डिग्री की कमी रही। यानी मैं ज्ञानी पुरुष के रूप में रहा हूँ इसलिए मैं अपने आपको भगवान नहीं कहलवाता। यदि मुझे खुद को केवलज्ञान प्रकट हुआ होता तो भगवान कहलाता, लेकिन इस काल में ऐसा हो नहीं सकता।

हम वीतराग धर्म के आधार पर 'भेदज्ञानी' कहलाते हैं, परंतु यों तो 'कारण सर्वज्ञ' कहलाते हैं। यह तो, हमें आत्मा का अनुभव हो चुका है, इसलिए इस जगत् में कोई भी चीज़ जानने को बाकी नहीं रही होती।

हमारा इन्वेन्शन छूटने के लिए

(अब एक ही ध्येय तय कर देना है कि) केवल 'शुद्धात्मानुभव' के अलावा इस संसार की कोई भी विनाशी चीज़ 'मुझे' नहीं चाहिए। हाँ, कुछ भी नहीं चाहिए, और मार खाकर मोक्ष में जाना है।

प्रश्नकर्ता : मार खाने के बाद 'रिसर्च' करता है न?

दादाश्री : हाँ, असली 'रिसर्च' तो मार खाने के बाद ही होती है। मारने के बाद 'रिसर्च' नहीं हो पाती।

यह मेरा 'इन्वेन्शन' किसलिए हुआ है? मार खाने से हुआ है। मैं ऐसी-ऐसी खाइयों में से निकला हूँ, ऐसे-ऐसे 'हिल स्टेशनों' पर चढ़ा हूँ... दूसरा, मुझे जगत् की कोई चीज़ नहीं चाहिए, जगत् में आप भी चढ़े हुए हो, ये सभी चढ़े हुए हैं, परंतु इन्हें ज्ञाता-दृष्टापन नहीं है, खुद का निरीक्षण नहीं होता। खाने में-पीने में, मस्ती में तन्मयाकार रहते हैं। इसलिए 'इन्वेन्शन' का सब भूल जाते हैं। हमारा निरीक्षण कितने ही जन्मों का है!

यदि आपको छुटकारा पाना हो तो एक बार मार खा लो। मैंने ज़िंदगी भर ऐसा ही किया है। उसके बाद फिर मैंने सार निकाल लिया कि मेरे लिए किसी भी प्रकार की मार नहीं रही, भय भी नहीं रहा। पूरा 'वर्ल्ड' क्या है, मैंने उसका सार निकाल लिया है। मुझे खुद को तो सार मिल गया है, परंतु अब लोगों को भी सार निकालकर देता हूँ।

बिजली की चमक में मोती पिरोया

अरे! ज्ञानी कितने होते हैं संसार में? पाँच या दस? ज्ञानी तो शायद ही कभी जन्म लेते हैं, और उसमें भी अक्रम मार्ग के ज्ञानी तो दस लाख वर्षों में जन्म लेते हैं, वह भी ऐसे वर्तमान आश्चर्य युग जैसे कलियुग में ही। लिफ्ट में ही ऊपर चढ़ाते हैं। सीढ़ियाँ चढ़कर हाँफना नहीं पड़ता। अरे! बिजली की चमकार में मोती पिरो ले! यह बिजली की चमकार हुई है, तब तू अपना मोती पिरो ले। पर तब मुआ धागा खोजने निकलता है। क्या करें? पुण्येई कच्ची पड़ जाती है।

शायद ही कभी ऐसे ग़ज़ब के पुरुष प्रकट होते हैं, और तब उन्हें खुद को ही बताना पड़ता है! यह वीतरागों के 'साइन्स' की बहुत उच्च प्रकार की खोज है! कैसा गूढ़ार्थ! अत्यंत गुह्य! यह 'रियल' और यह 'रिलेटिव', का भेद डालना, वह 'ज्ञानी पुरुष' के अलावा किसी और का काम ही नहीं है न! यह तो बहुत बड़ा वन्डर है, इलेवन्थ वन्डर ऑफ द वर्ल्ड, वर्ना, वर्ल्ड में ऐसा हो नहीं सकता। ऐसा सुनने में ही नहीं आया होगा!

अर्थात् यह आप में पूर्ण रूप से प्रकट हो चुका है, इसलिए सभी क्रियाएँ हो सकती हैं। संसार की सभी क्रियाएँ हो सकती है और आत्मा की सभी क्रियाएँ हो सकती हैं। दोनों अपनी-अपनी क्रियाओं में रहते हैं, संपूर्ण वीतरागता में रहकर! ऐसा है यह अक्रम विज्ञान!

'विज्ञान' अर्थात् चेतन है यह। अत: आपको कुछ भी नहीं करना पड़ता। यह ज्ञान ही सावधान करता है आपको। यह ज्ञान ही 'इटसेल्फ' काम करता रहता है। यह 'अक्रम विज्ञान' है।

यह विज्ञान है, तुरंत फल देता है। अक्रम विज्ञान है! उदय में आया है मेरे। यह मेरा ज्ञान नहीं है, आगे से, परंपरागत चला आया है। लेकिन यह अलग तरीके से आया है। दो ही घंटों में इंसान का काम निकाल देता है। वर्ना, सौ-सौ, पच्चीस-पचास सालों तक साधना करनी पड़ती है। यह तो बगैर साधना के, अक्रम विज्ञान आपका काम निकाल देता है।

देखो कैसा आश्चर्य! दस लाख सालों में यह सब से बड़ा आश्चर्य है! बहुत लोगों का कल्याण कर दिया!

दादा के ज्ञान बुल्डोज़र से कल्याण

वर्ल्ड के तमाम प्रश्नों का सॉल्यूशन (हल) करने वाली यह ओब्ज़र्वेटरी है ।

प्रश्नकर्ता : इस जगत् में चली आ रही मान्यताओं पर दादा के ज्ञान से बुल्डोज़र चल गया।

दादाश्री : बुल्डोज़र नहीं चलाते तो लाख

जन्मों में भी नहीं छूट पाते। यह सब, क्रमिक अर्थात् यों कान पकड़ना और अक्रम अर्थात् यों पकड़ना। तब फिर सभी जगह पर बुल्डोज़र चला दो। यदि यह ज्ञान ही पकड़ ले न, तब भी काम हो जाएगा। वास्तविक विज्ञान, जैसा है वैसा अनावृत हुआ है। कितना हो रहा है, कितना करना पड़ रहा है, कितना हो जाता है, सबकुछ बता दिया है। डिस्चार्ज के बारे में किसी ने कुछ भी नहीं बताया। डिस्चार्ज का यह स्वरूप सब से पहले हम बता रहे हैं। अक्रम विज्ञान में जो कुछ भी बता रहे हैं, वह सब पहली बार या प्रथम चीज़ है।

मेरी भावना, तीर्थंकरों का विज्ञान पाए जगत्

दिस इज़ कैश बैंक इन दी वर्ल्ड (संसार में यह नकदी बैंक है) एक घंटे में नकद तेरे हाथ में थमा देता हूँ। रियल में बैठा देता हूँ। और सब जगह उधार है। किश्तें भरते रहो। 'अरे! अनंत जन्मों से तू किश्तें भरता आया है, फिर भी हल क्यों नहीं निकलता? क्योंकि नकद किसी जन्म में मिला ही नहीं है।

दो घंटे में ऐसा हुआ हो, कभी सुनने में आया है? दो घंटे में आप शुद्धात्मा बन गए, क्या ऐसा सुनने में आया है? लेकिन यह वैज्ञानिक तरीका है और तीर्थंकरों का ज्ञान है यह। यह मेरा मौलिक नहीं है। यह जो तरीका है वह मेरा मौलिक (तरीका) है, अक्रम का तरीका!

यह विज्ञान है, यह तो तीनों काल का विज्ञान है! भूतकाल में था, वर्तमान काल में है और भविष्य काल में बदलेगा नहीं, ऐसा विज्ञान है यह तो! क्या आपको नहीं लगता कि यह विज्ञान है दादा का?

यह विज्ञान औरों से एकदम अलग है। यह विज्ञान शायद ही कभी, अपने आप उत्पन्न होता है। यह विज्ञान कोई मेरा बनाया हुआ नहीं है, यह तो उत्पन्न हुआ है। अत: यहाँ पर जितनों का काम निकल गया उतनों का निकल गया। शास्त्रकारों ने तो सोलहवें तीर्थंकर के समय में, बहुत बड़ा लिख था कि पाँचवे आरे में बहुत से लोग काम निकाल लेंगे।

हमारी यही भावना है कि भले ही एक अवतार देर हो जाए तो हर्ज नहीं लेकिन यह 'विज्ञान' फैलना चाहिए और 'विज्ञान' से लोगों को लाभ होना चाहिए। इसलिए मैं खुलासा करने आया हूँ।

मेरा 'आइडिया' ऐसा है कि पूरे जगत् में 'इस' 'विज्ञान' की बात कोने-कोने तक पहुँचानी है और हर एक जगह पर शांति होनी ही चाहिए। मेरी भावना, मेरी इच्छा जो भी कहो मेरा सबकुछ यही है!

- जय सच्चिदानंद

विशेष निवेदन

कोरोना वायरस महामारी की वर्तमान परिस्थिति में पूज्यश्री दीपकभाई की निश्रा में आयोजित सभी कार्यक्रम तथा आप्तपुत्रों-आप्तपुत्रीओं के विविध सेन्टरों में आयोजित सभी कार्यक्रम विलंबित किए गए है। भविष्य में परिस्थिति सामान्य होने के बाद सरकार द्वारा धार्मिक कार्यक्रमों के लिए अनुमति देने के बाद कार्यक्रम आयोजित होंगे।

महामारी को ध्यान में रख कर महात्माओं को सूचित किया जाता है कि अड़ालज त्रिमंदिर संकुल में होने वाले दिपावली-नूतन वर्ष और महेसाणा में आयोजित जन्मजयंती महोत्सव महात्माओं की हाजिरी में मनाना संभव नहीं हो पाएगा। वर्तमान आयोजन अनुसार इन्टरनेट के माध्यम से ओनलाइन सत्संग तथा उत्सव मनाना जारी रहेगा।

सितम्बर 2020
वर्ष-15 अंक-11
अखंड क्रमांक - 179

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. G-GNR-348/2018-2020
Valid up to 31-12-2020
LPWP Licence No. PMG/HQ/036/2018-2020
Valid up to 31-12-2020
Posted at Adalaj Post Office
on 15th of every month.

नव कलमें
भाव प्रतिक्रमण
अक्रम विज्ञान
चार्ज-डिस्चार्ज
कॉज़ - इफेक्ट
रियल-रिलेटिव
शुद्धात्मा का बहीखाता
फाइलों का समभाव से निकाल
व्यवस्थित शक्ति
शब्द (टेपरिकॉर्डर)
शॉर्टहेन्ड
वाणी - कोडवर्ड

ज्ञानी पुरुष 'दादाश्री', स्पिरिचुअल साइन्टिस्ट

सोना, तांबा का 'मिक्स्चर' हो गया हो और उसमें से यदि शुद्ध सोना निकालना हो तो उन सभी के गुणधर्मों को जानने के बाद ही उनका विभाजन किया जा सकेगा। उसी प्रकार आत्मा और अनात्मा के गुणों को जानना पड़ता है, उसके बाद ही उनका विभाजन हो सकता है। उनके गुणधर्मों को कौन जानता है? वह तो 'ज्ञानी पुरुष' ही जो कि 'वर्ल्ड' के 'ग्रेटेस्ट साइन्टिस्ट' हैं, वे ही जान सकते हैं, और वे ही दोनों को अलग कर सकते हैं। इतना ही नहीं कि आत्मा-अनात्मा का विभाजन कर देते हैं, लेकिन आपके पापों को जलाकर भस्मीभूत कर देते हैं, दिव्यचक्षु देते हैं और 'यह जगत् क्या है, कैसे चलता है, कौन चलाता है, वगैरह सब स्पष्ट कर देते हैं, तब जाकर अपना पूर्ण काम होता है।

- दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner. Printed at Amba Offset, B - 99, GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025.